ख़ुश्बू की बगिया

गिरिराज पांडे

खुश्बू की बगिया

(काव्य संग्रह)

गिरिराज पांडे

प्रकाशक :

डोटकोम पब्लिकेशन

अहमदाबाद

Khushboo ki bagiya

by : Giriraj Pande

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024

मूल्य : 150 /- Rs

ISBN : 978-81-953695-9-1

प्रकाशक :
डोटकोम पब्लिकेशन
अहमदाबाद

कम्प्यूटर टाईप-सेटिंग एन्ड ले-आउट :
कुमार इन्फो
अहमदाबाद
(M) 72111 83881

Priters :
शिवशक्ति ऑफसेट
D-13, रवि एस्टेट, अहमदाबाद - 380 004

समर्पण

श्री केशवदत्त पांडे

एवं निर्मला पांडे

माता-पिताजी के श्री चरणों में

सादर समर्पित.....

''सजग प्रहरी बनकर साहित्य जगत में स्थापित होगी : ख़ुशबू की बगिया

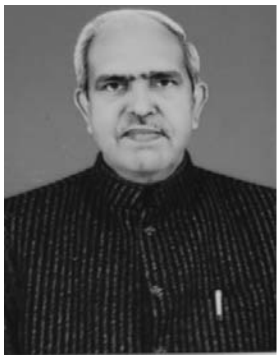

साहित्य वास्तव में मानव एवं समाज को सुन्दर, समुन्नत एवं श्रेष्ठ बनाने की एक साधना है । श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट साहित्य, मानव समाज को एक नई दिशा एवं दशा प्रदान करता है, यह हमारे कौतूहल और जिज्ञासा-वृद्धि को शान्त करता है, ज्ञान की पिपासा को तृप्त करता है। साहित्य हमेशा मुरझाए एवं शुष्क मानव को सघन संवेदना की सजलता से सरावोर कर देता है । साहित्य की कोमल विधाएं , समाज में उल्लास एवं उमंग की छटा बिखेर देती हैं, साहित्य ही जीवन को सौंदर्य की सतरंगी आभा से मंडित करता है, अतः साहित्य का सम्बन्ध केवल स्वानुभूति से ही नहीं है, बल्कि समाज के विराट परिवेश एवं परिसर के साथ अविछिन्न रूप से है । साहित्य एक जटिल साधना है । साहित्य की चैतन्य सृष्टि, साहित्यकार का महातप है तथा दिव्य व्यक्तित्व की संजीवनी क्षमता है ।

सक्षम साहित्यकार एवं कवि गिरिराज पांडे जी द्वारा विरचित पुस्तक **ख़ुशबू की बगिया** का प्रकाशन, भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की पारम्परिक विरासत को निश्चित ही संजीवनी प्रदान करेगी । इनकी रचनाओं में विचारों की प्रखरता है और भावनाओं में शीतलता है, जिससे मनुष्य की जड़ता समाप्त होने की प्रबल सम्भावनाएँ है । **ख़ुशबू की बगिया** पुस्तक को एक बार पढ़ लेने से, मानव-मस्तिष्क के सूक्ष्म तार झनझना उठते हैं, यह एक ऐसा दहकता हुआ सत्य है जो तंद्रा और तमस को जला देता है, जिससे लोग देश और समाज के लिए, अपना सर्वस्व होम करने को तैयार हो जाते हैं ।

महत्वाकाँक्षाएँ बड़ी रखने में कोई हर्ज नहीं । ऊँचा उठना, आगे बढ़ना और सफलता प्राप्त करना मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है, यह सही रीति से उपलब्ध होती रहे तो मनोबल बढ़ता है । प्रगति की दिशा

में बहुत कुछ करते बन पड़ता है, ऊँचा लक्ष्य सामने हो तो शारीरिक श्रम और मानसिक उत्साह उभरने की गुंजाइश भी रहती है। महत्वाकांक्षा उभरने से पहले यह जरूरी है कि इसके औचित्य पर भी विचार कर लिया जाए। हर मनुष्य अपने श्रम, उत्साह और विवेक के आधार पर ही ऐसी सफलताएँ प्राप्त कर सकता है।एक विशेष प्रकार की महत्वाकांक्षा, रचनाकार में भी भरी हुई है, जो प्रशंसनीय होने के साथ-साथ, दूसरों की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखती है। किसी के मार्ग में बाधक नहीं बनती, बल्कि मार्ग प्रशस्त करती हैं। आज हम उन्नति तो चाहते हैं, पर मानवीय गुणों के विकास का प्रयत्न नहीं करते। समाज में शांति और संपन्नता रहे, यह सभी की इच्छा है, पर इसके मूल आधार, पारस्परिक प्रेमभाव की वृद्धि का उपाय नहीं खोजते। भौतिक सुविधाओं में वह शक्ति नहीं है कि व्यक्ति को श्रेष्ठ बना दे। गिरिराज जी में अच्छे व्यक्तित्व के गुण विद्यमान हैं, जो संपन्नता का उपार्जन करते हैं। इस सम्पन्नता रूपी तत्व को, हम जब तक नहीं समझेंगे, तब तक दौलत के पीछे भागते रहेंगे। आदर्शवाद की उपेक्षा करके, संपन्नता के लिए दौड़ लगाने का परिणाम, लाभ के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध होगा। यह दुनिया अधिक अच्छी, अधिक सुन्दर, अधिक संपन्न और अधिक शान्तिपूर्ण हो, यही हम सब चाहते हैं तो हमें निज व्यक्तित्व की श्रेष्ठता की ओर ध्यान देना पड़ेगा।

प्रगति तभी सम्भव व स्थाई रह सकेगी और सुख-शान्ति में स्थिरता बनी रहेगी, जब मनुष्य अपने को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का प्रयास करे। यही बात श्री गिरीराज ने **ख़ुशबू की बगिया** पुस्तक में भावनात्मक रूप से कही है। कठिनाइयों से लड़ते रहना, न केवल अपने जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यक है बल्कि दूसरे लोगों को भी प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति कठिनाइयों से जितना भागता है वह उतना ही अपने आप को निकम्मा बनाता है, और जो उसका जितना स्वागत करता है, वह उतना ही अपने आप को योग्य बनाता है। गिरिराज जी ने इस बात को बड़ी गंभीरता से लिखा है

जितना भागो कठिनाई से उतना पीछा करती है
डटकर करो सामना उसका तब वह पीछे हटती है

मनुष्य जीवन की सफलता, उसकी इच्छा शक्ति पर निर्भर करती है । जो व्यक्ति जितना इच्छाशक्ति का बल रखता है, वह जीवन में उतना ही सफल होता है, ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति पूर्णरूपेण गिरिराज पांडे जी के अन्दर दिखाई पड़ती है ।

ख़ुशबू की बगिया से यह प्रेरणा अनायास मिलती है कि हमें निजी सिद्धांतों के साथ अपने विचारों में मज़बूती रखनी चाहिए और कठिनाइयों से लड़ने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए, यही जीवन को सुखी बनाने का सर्वोत्तम उपाय है । बुद्धि का महत्व सर्वोपरि है यह मनुष्य के लिए ईश्वरीय वरदान है । हर व्यक्ति विद्या और बुद्धि की शक्ति से संपन्न नहीं होता, कुछ बिरलों को ही माँ सरस्वती के आशीर्वाद से यह ज्ञान-संपदा मिलती है, ऐसे पात्रों में से एक हैं श्री गिरिराज पांडे जी

असंख्य मनुष्य ऐसे हैं, जिनके पास नाम मात्र का बुद्धि तत्व है, जो किसी तरह अपना उदरपूर्ति या फिर जीवनयापन मुश्किल से कर पाते हैं, तो उनके द्वारा महान कार्य करना, यश प्राप्त करना कैसे सम्भव है? बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं जिनको विशिष्ट बुद्धिबल प्राप्त है, जो दूर तक की सोच सकते हैं, जिनको बारीक बातें सोचने की क्षमता है, जिनका विवेक परिमार्जित है, जिन्होंने विशाल अध्ययन किया है एवं जो अपने बुद्धिबल से असाधारण कार्य करने की क्षमता रखते हैं, ऐसे लोग ही अपनी साहित्यिक सेवाएं दे पाते हैं ।

मेरे अनुसार **ख़ुशबू की बगिया** पुस्तक, राष्ट्र-निर्माण हेतु सजग भारत के समग्र जनमानस को सुखद जीवन जीने का संदेश देगी और इसकी रचनात्मक सामग्री, हृदयग्राही होकर निश्चित रूप से कालजयी सिद्ध होगी । यह संग्रह निरंतर ऐसी ही ऊँचाइयाँ प्राप्त करता रहे, ऐसी मेरी मंगलकामनाएँ हैं ।

- प्रो डॉ. सोम प्रकाश पांडे

संस्कृत विभागाध्यक्ष

हृदयोद्‌गार का कवि

हृदयोद्‌गार ही कवि की सर्जना होती है स्वांत: सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा कहकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है । सच्चे सुख की प्राप्ति तभी संभव है जब मनुष्य किसी दूसरे के लिए ऐसा कार्य करता है, जिसमें वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कोई भी स्वार्थ पूर्ण लाभ प्राप्त न करता हो ।

कवि धर्म परोपकार के लिए ही होता है ऐसे साहित्य को पढ़कर तडपे बिना नहीं रहा जा सकता रोते हुए आँसुओं की स्याही से जलते हृदय ने जिसे लिखा हो ऐसे साहित्य में विचार रूपी दर्शन और सौंदर्य रस का संगम मिलता है । जो किसी भी राष्ट्र समाज के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करता है । प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की चित्त वृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है ।

प्रत्येक रचना प्रकृति के अनुरूप अपने युग के अनुरूप एवं लेखक के मन: स्थित के अनुरूप ही होती है । सच्चे साहित्य को एक बार पढ़ लेने पर व्यक्ति का चैन सुकून और नींद हराम हो जाती है । उसके मस्तिष्क के सूक्ष्मतार झनझना उठते हैं ।

साहित्य में ऐसा दहकता हुआ सत्य होता है जो तंद्रा और तमस को जला डालता है । साहित्य से ही विचारों में प्रखरता एवं भावनाओं में शीतलता आती है जिससे मनुष्य की जड़ता समाप्त हो जाती है साहित्य में कितनी आभा कितनी रोशनी कितनी मौलिकता और कितनी शक्ति है यह कहने लिखने एवं पढ़ने की बात नहीं है । यह अनुभव करने की बात है । उत्कृष्ट साहित्य समाज में वांछित परिवर्तन ला सकने में सक्षम एवं समर्थ हैं । ओजस्वी विचार एवं दर्शन के प्रभाव से रचा साहित्य समाज के मुरझाते हताश निराश जीवन में पुष्प के समान सुगंध विखेर देते हैं । साहित्य मानव समाज को रोग शोक दरिद्र अज्ञानता परावलंबन से बचाकर उसमें आत्म बल का संचार करता है । जो की अक्षय निधि है समाज को नई दिशा देता है । समाज में रहने वाले

मानव को मानवता की उच्चतर लक्ष्य पर आरूढ करता है। साहित्य का लक्ष्य ही मनुष्य के अज्ञान को दूर करना होता है। जिससे मनुष्य अपना आंतरिक विकास करता है। साहित्य का उद्देश्य ही है कि सहज सरल भाषा में ऊँचे विचारों और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अनायास ही सर्वाग्रही बना देता है।

आदर्शवाद की उपेक्षा करने वाला संपन्नता अर्जित नहीं कर सकता। भले ही धन से वह कितना भी परिपूर्ण हो साहित्य तो हमेशा व्यक्तित्व की बात पर ही जोर देता है ना की भौतिक साधनों पर। मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का काम सामुहिक चरित्र उत्थान का कार्य जिससे समस्याओं उलझन से छुटकारा मिल सके साहित्य ही करता आया है। कभी अपनी कविता को साधना के खेत में श्रम सीकर द्वारा उत्पन्न एवं विकसित करता है जिससे मानव समाज में सुख शांति की फसल तैयार होती है। लोकप्रियता कभी भी रचना का मानक नहीं बन सकती असली मानक तो होता है कवि का रचनाकार का दायित्व बोध उसके सरोकारों उसकी जीवन दृष्टि जो समाज को कुरीतियों से बचकर सब मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। साहित्यकार ही प्रत्येक वस्तु में विश्व की आत्मा का दर्शन कर सकता है साहित्य सिर्फ समाज के रूप का चित्रण ही नहीं करता वरन समाज की उन्नति में योगदान देता है। समाज को नई दिशा एवं दशा प्रदान करता है। समाज की क्रूरता दूर करता है। साहित्य यथार्थ को दिखाते हुए आदर्श की तरफ ले जाता है। साहित्य चिरकालिक हीनता की भावना की तृप्ति करता है काव्य संग्रह का प्रकाशन बेहद खुशी का विषय है। हालांकि इस काल में साहित्यिक संग्रह के प्रकाशन का बीड़ा उठाना जोखिम भरा कार्य है फिर भी इस महान कार्य को करने पर साहित्य अनुरागियों की उत्साह की प्रशंसा की जानी चाहिए ताकि वह माँ सरस्वती के आराधना पाठ में कदम से कदम मिलाकर चलते हुए अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करें ऐसी मेरी मंगल कामना।

– अतुल पांडे

प्रधानाध्यापक

बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश

महक रही है : ख़ुशबू की बगिया

सामाजिक बुराइयों को दूर करने एवं किसी भी क्रांति को गति प्रदान करने में साहित्यकारों की महती भूमिका रहती है । **ख़ुशबू की बगिया** संग्रह का प्रकाशन निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति एवं साहित्य जगत के साथ समाज के विभिन्न वर्गों कार्य क्षेत्र के व्यक्तियों को कर्तव्य बोध से परिचय कराते हुए श्रमिक कृषक शिक्षक, कलमकार, कवि, संगीतकारों, युवा पीढ़ी आदि के सहयोग से राष्ट्र निर्माण हेतु सजग भारत के समग्र जनमानस को सुखद जीवन जीने का संदेश रचनात्मक सामग्री ह्रदय ग्राही होकर कालजयी सिद्ध होगी।

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति हमारी पारंपरिक विरासत को संजीवनी प्रदान करती रही है । ऐसे में साहित्य जगत के प्रबुद्ध शुभचिंतकों का रचनात्मक अभिनव प्रयास निश्चित ही एक नई दिशा की ओर अग्रसर करने में सहयोगी सिद्ध होंगे । आज के इंटरनेट के मायाजाल से विलुप्त होती सांस्कृतिक धरोहर के पुनर्जागरण को नई दिशा मिलेगी मुझे विश्वास है कि पावन परंपरा का यह नव परिजात अपनी गरिमा, सुषमा और सुगंध से माँ शारदे को प्रमोद प्रदान करते हुए सुनिष्ठ साधकों को यशस्वी बनाएगा

एक-एक पुष्प से पुष्प माला बनाने जैसी प्रक्रिया में लगे गिरिराज पांडे बधाई के पात्र हैं । जिन्होंने लगातार साहित्य साधना में अपने आप को समर्पित करते हुए संपूर्ण मानव समाज को लाभान्वित किया माँ शारदे की आराधना का यह क्रम अनवरत चले ऐसी मेरी शुभकामनाएँ हैं । ताकि साहित्य जगत हमेशा पुष्पित पल्लवित बना रहे ।

युवा कवि को एक मंच मिले लेखन की नवीन प्रेरणा मिले तथा उनके भीतर नव ऊर्जा का प्रस्फुटन हो ऐसी मेरी मंगल कामनाओं के साथ शुभआशीष भी ।

- सिद्धार्थ पांडे
प्रवक्ता
हिंदी केंद्रीय विद्यालय
केंद्रीय विद्यालय लखनऊ कैंट

विभिन्न रंगों के फूलों का गुलदस्ता

कविता विचारों एवं भावनाओं को प्रस्तुत करने का एक ऐसा माध्यम है जिससे मानव समाज को नई प्रेरणा मिलती है प्राचीन काल की कविताओं में छंद एवं अलंकारों का बहुत महत्व माना जाता था लेकिन आधुनिक काल में कविताएँ छंद एवं अलंकारों से स्वतंत्र हो गई हैं कविताओं में छंदों और अलंकारों की अनिवार्यता खत्म हो गई है और अब नई कविता का दौर शुरू हो गया है क्योंकि कविता में भाव तत्व की प्रधानता होती है रस को कविता की आत्मा माना जाता है आज मुक्त छंद कविताओं की नदियाँ बह रही हैं।

आपकी कविताओं में एक लय है भावों की लय जो पाठकों को इसमें बांधे रखती है, जिस प्रकार से प्रशव पीड़ा के पश्चात जो अभिव्यक्ति का जन्म होता है वह सृजनात्मक एवं गहन अनुभूति का सुखद चरमोत्कर्ष होता है ।

आपके इस काव्य संग्रह का ऐसी ही प्रसव पीड़ा के पश्चात जन्म हुआ अभिव्यक्ति का संग्रह है । आपकी इस कविता संग्रह में ज़िंदगी के बहुत से रंग हैं आपने अपनी कविता के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों पर भी कड़ा प्रहार किया है चाहे वह महिला के प्रति बढ़ते अपराध हो भ्रष्टाचार हो सांप्रदायिकता का ज़हर हो रूढियों में जकड़ी ज़िंदगियाँ हैं या फिर घटती मानवीय संवेदनाएँ सभी पर आपका चिंतन एवं लेखन प्रसंशनीय है ।

आपकी रचनाओं में भाषा में प्रवाह है लय है आपने अपनी कविताओं में कम शब्दों में प्रवाह पूर्ण सारगर्भित बात कही है आपकी कविताओं में शिल्प सौंदर्य है आपने अपनी भावना चिंतन और विचारों को सहज और सरल तरीके से प्रस्तुत किया है निश्चित ही कविता का अर्थ पाठक को सहजता से समझ आ जाता है ।

काव्य प्रेमियों के लिए यह एक अच्छा काव्य संग्रह है यह निरंतर नई ऊँचाइयों को छूता रहे यह मेरी शुभकामनाएँ ।

- अंबिकेश पांडे
प्रधानाध्यापक
बेसिक शिक्षा परिषद, प्रतापगढ़

प्रस्तावना

शत शत नमन

स्नेह वात्सल्य एवं करुणामयी माँ को जिन्होंने जीवन एवं सद प्रेरणा दी मैं इसे जनमांतर संस्कार जन्य, पुण्य प्रयास परिणित माता पिता एवं पूर्वजों का आशीष ही मानूँगा कि मुझ जैसे सौंदर्य शास्त्र अनुगत, वाक दृष्टि दिप्त, यथा स्थिति विरुद्ध, मंदबुद्धि, अशिक्षित व्यक्ति को माँ वीणावादिनी की अहेतुक कृपा से कविता लिखने की प्रेरणा एवं सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

जो भी मेरे हृदय से उद्गार निकला उसी भावना को शब्दों में पिरोकर टूटी फूटी भाषा में कविता का रूप देने का प्रयास किया है । यदि मेरे इस काव्य संग्रह में लिखी कोई भी कविता पाठक के हृदय तक पहुँच कर पाठक को रंच मात्र भी स्पर्श करके आनंदित करती है तो मैं अपने श्रम, समय एवं मनोयोग को व्यतिरिक्तया सार्थक मानूँगा ।

शब्द वर्णों का समूह है । यह सार्थक भी है और निरर्थक भी । एक शब्द दूसरों से मिलकर वाक्य बना देता है और वाक्य का समूह एक पुस्तक । मेरे इस काव्य संग्रह में शब्दों की कोई बहुत बड़ी बाजीगरी नहीं है, बल्कि हृदय से उठा हुआ ऐसा भाव है जिसे जनसाधारण लोग प्रयोग करते हैं, समझते हैं ।

अपने जीवन काल में, अपने परिवेश, कार्यक्षेत्र, जनजीवन में मैंने जो देखा, जो समझा, जिसकी अनुभूति की उन्हीं को अपने मानस पटल से कागज के पन्नों पर उतारा है । मेरी कविताएँ किस छन्द, किस रस, किस अलंकार में हैं मुझे नहीं पता ।

प्रस्तुत इस काव्य संग्रह में संग्रहित कविताएँ मेरी वेदना और मेरे भाव ही हैं जो शब्दों के रूप में प्रस्तुत हुए हैं । आशा करता हूँ कि मेरे विचारों की अनुभूति आप प्रबुद्ध जनों तक पहुँच पाएगी समाज व परिवार की सर्वोत्तमुखी प्रगति के लिए यह आवश्यक है, कि लोग दूसरे के विचारों को भी महत्व दें, अच्छी बातों को माने एवं गलत का प्रतिकार करें । प्रत्येक मनुष्य का दृष्टिकोण, विचार अनुभव, रुचि एवं संस्कार अलग-अलग होते हैं । सबकी सोच एक जैसी नहीं हो सकती है । किंतु आगे बढ़ने एवं सफल होने में सकारात्मक सोच की अहम भूमिका होती है, जो हतोत्साहित को उत्साह में सहजता से बदल देती है ।

यह पूर्णतः सत्य है की हृदय में जागृत वेदना से ही कविता का जन्म होता है जैसा की हमारे कवियों ने कहा है, वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान, और यह वियोग (वेदना) किसकी होगी इसके लिए कोई सीमा नहीं है । किसी के वियोग में हृदय से निकला हुआ उदगार ही कविता का रूप लेती है । और यह वियोग व्यक्ति प्रेम, प्रकृति प्रेम, ईश्वर प्रेम या धन प्रेम किसी भी रूप में हो सकता है ।

जब किसी व्यक्ति को किसी भी चीज से प्रेम तो हुआ किंतु साक्षात्कार (मिलन)नहीं हो पाता तो उसके हृदय में उसको पाने की तीव्र लालसा उत्पन्न होती है, जिसे वह एन केन प्रकारेण पाना चाहता है ।

जिसके दिल में वेदना जितनी गहरी होगी वह उसमें उतना ही डूबेगा । जब व्यक्ति उसके पीछे पूर्ण रूपेण पागल हो जाता है, हृदय के तार झनझना उठते हैं, दिल में बिरह की अग्नि जल उठती है तो ऐसे समय में उसके हृदय से जो पद्यात्मक उद्गार निकलता है वही कविता का रूप ले लेता है ।

मेरी काव्य सर्जना का जन्म भी वियोग एवम् वेदना से ही हुआ है -

जब अभाव की जगी वेदना
मन ये कुंठित हो बैठा
हृदय भाव निकला आँखों से
तब मैं कविता लिख बैठा
आज मैं उदास हूँ
भावनाओं से दबे हैं भावनाओं के लिए
कोई नहीं पूछता तू आज क्यों उदास है
आज मैं उदास हूँ

आज मेरी कविता अभाव से प्रारंभ होकर समाज के विभिन्न रूपों को देखते हुए, उन पर कुछ लिखते हुए, मुझे सुखद अनुभूति करा रही है ।

छोटी सी दुकान मेरी दिनभर ही बैठा रहता हूँ । ग्राहक से जब समय मिला तो कविता लिखता रखता हूँ । आज हमारी साहित्य सर्जना पूर्णता स्वान्तः सुखाय पर आधारित हो गई है, जब तक कुछ लिख ना लूँ चैन नहीं मिलता है ।

मैं अपनी मनः स्थिति को संसार के झंझावातों से दूर रखने के लिए भी साहित्य सेवा में लिप्त रहता हूँ, क्योंकि साहित्य ही आत्म संतोष एवं आनंद की अनुभूति करता है, जिससे मन एकाग्रचित हो जाता है ।

मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है कि मेरे इस काव्य संग्रह के संपादन का दायित्व निर्वहन हमारे परम आदरणीय, गुरु तुल्य, अनुभवी कवि श्री विजय तिवारी जी, मेरे काव्य की एक-एक पंक्ति को मनोयोग से पढ़ कर रस विन्यास का अद्भुत समायोजन करते हुए, गागर में सागर भर रहे हैं । मेरे इस काव्य संग्रह एवं

काव्य लेखन को प्रेरणा एवं विस्तार देने में मेरे अग्रज अनुज एवं गुरूजनो के साथ-साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी शुभचिंतकों का आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्दों की कमी पड़ रही है । अतः में अपने हृदय की अनुभूतियों से ही सबका आभार व्यक्त करता हूँ ।

मेरे अग्रज श्री सिद्धार्थ पांडे, अनुज अतुल पांडे एवं अंबिकेश पांडे के साथ हमारे पूज्य गुरुदेव डॉक्टर सोम प्रकाश पांडे जी का मार्गदर्शन क्षण अनुक्षण हमें प्राप्त होता रहा है, मैं विशेष रूप से इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ तथा आशा करता हूँ की निरंतर ऐसे ही मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहे, ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है ।

यह संग्रह, मैं स्नेह वात्सल्य एवं करुणा मयी माँ को नमन करते हुए समर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझे जीवन एवं सद प्रेरणा दी

मैं प्रकाशक का विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनके माध्यम से बिखरे हुए पुष्प गुँथकर एक हार का रूप ले सके हैं ।

अंत में मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस काव्य संग्रह में सहयोग एवं प्रोत्साहन दिया ।

धन्यवाद

- गिरिराज पांडे

वीर मऊ

प्रतापगढ़

अनुक्रमणिका

१. प्रार्थना	१९
२. श्री गणेश	२०
३. तुम ना समझ पाए	२१
४. यह निर्णय हमको करना है	२२
५. ख़्वाब का महल	२४
६. अभाव की पुत्री (चिंता)	२५
७. गुलाब दे गया	२६
८. प्रथम चरण बन जाओ	२७
९. निगाहें ऐसी डालो तुम	२८
१०. जी न पाया	२९
११. बदल लेगा	३०
१२. मेरी तरफ	३१
१३. मिल जाओ मोहन	३२
१४. फिर कब आओगे	३३
१५. आकार में ढलते गए	३४
१६. बढ़ा दीजिए	३५
१७. मुझको	३६
१८. सदा ही उल्लास	३७
१९. चमकता एक सितारा था	३८
२०. नैतिकता हो	३९
२१. गुल खिलाओ	४१
२२. सुखमय सा संसार बने	४२
२३. प्रकृति चित्रण	४३
२४. डरना पड़ा	४४
२५. मतलब नहीं	४५
२६. ऋतु फागुनी आ गई	४६
२७. दिल का लगाव था	४७
२८. फिर मिले ना मिले	४८
२९. माँ का आँचल	४९

३०. सोच लो ५०
३१. ख़ुश्बू की बगिया ५२
३२. चकाचौंध सी ज़िंदगी!! ५३
३३. समझा ५४
३४. पर्याप्त होना चाहिए ५५
३५. सादगी का सिंगार ५६
३६. मिल गई ज़मीं ५७
३७. याद आती है ५८
३८. ज्योतिर्मान है हिंदी ५९
३९. धन के पीछे भागा ऐसे ६०
४०. गौरा के संग ६१
४१. डूब जाता हूँ ६२
४२. उड़ान ६३
४३. रहस्य ६४
४४. तो अच्छा था ६५
४५. तब तक दीप जलाऊँगा ६६
४६. सच्चा इंसान मिला ६७
४७. याद करुँ ६८
४८. मेरी इच्छा ६९
४९. बहुत कठिन है ७०
५०. हजार खूबियां ७१
५१. प्रेम का दीप ७२
५२. देख लेता हूँ ७३
५३. रह गए ७४
५४. उलझा रहा ७५
५५. गंगाजल बनाऊँगा ७६
५६. फूल हैं ७७
५७. जाने किस चाह में ७८
५८. निवेदन ७९
५९. मज़दूर ८०
६०. आँखों का सागर ८१

६१.	मुझे गाँव में रहने दो	८२
६२.	संघर्ष ही जीवन	८४
६३.	आंतरिक शक्ति	८५
६४.	ज़िंदगी का सूनापन	८६
६५.	परिवार	८७
६६.	सवाल ये है	८८
६७.	दिल न ये टूटा होता	८९
६८.	जब मन में	९०
६९.	सूनापन और एकाँतवास	९१
७०.	हमारा संरक्षण	९२
७१.	हमारा भाग्य	९३
७२.	मेरी इच्छा	९४
७३.	उसको मंजिल लिख नदिया	९५
७४.	पिता	९६
७५.	जिन्दगी का रहस्य	९७
७६.	आज इतराई होगी	९८
७७.	सदा ही उल्लास	९९
७८.	दिलों के फूल	१००
७९.	बिछड़ने का दर्द	१०१
८०.	ख़ुशियों में ज़िंदगी	१०२
८१.	अपनी मिट्टी	१०३
८२.	प्रंवचना	१०४
८३.	देश निराला	१०५
८४.	भूल को सुधार लें	१०६
८५.	देखो सावन आया	१०७
८६.	प्यार करता हूँ	१०८
८७.	सकारात्मक सोच	१०९
८८.	दिल के कोने में	११०
८९.	शिक्षक	१११
९०.	रक्षाबंधन	११२

१. प्रार्थना

हे प्रभु वंदन मेरा स्वीकार अब तो कीजिए
चरण वंदन नमन का अधिकार हमको दीजिए

रह न जाऊँ दूर तेरे चरणों से ही मैं सदा
चरणों में ही अपने अब स्थान मुझको दीजिए

मन भटकता है मेरा नित स्वार्थ डूबे भाव में
मैं भटक ना जाऊँ पथ से भाव मुझको दीजिए

मैं तो हरदम संग तेरे चलने के लायक नहीं
भक्त कहलाने का ही अधिकार हमको दीजिए

आज तूफ़ाँ है बहुत मझधार मेरी नाव है
डगमगा ना जाए नैया पार अब तो कीजिए

बढ़ती जाए प्रीत मेरी नित ही तेरे भाव में
भूल न पाऊँ कभी वह भाव हमको दीजिए

❋

२. श्री गणेश

सुत गौरी शिव शंकर शोभित रिद्धि सिद्धि साथ लिए
बढ़कर मात पिता है जग में कहकर चारों ओर फिरे

आज चतुर्थी जन्मदिवस की जो अनुपम बेला आई
निश दिन गणपति साथ रहे ये मन में भावना छाई

विघ्न विनाशक तुम्ही हो जग के प्रथम पूज्य गणपति तुम्हीं हो
सकल चराचर में तुम ही छाए धरा भी तुम और गगन तुम्हीं हो

तुझे ढूँढता कभी न भटकूँ दिलों में मेरे बसे जो तुम हो
तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खेवइया जो पार कर दे वो तो तुम्हीं हो

दिलों में आकर बसों हे गणपति दिलों का सबके भाव तुम्हीं हो
शुरू जो होता है काम जग में सभी का श्री गणेश तुम्हीं हो

सभा बीच में तुम्हें बुलाऊँ लड्डू का मैं भोग लगाऊँ
बंदन कर तेरे चरणों का निसिदिन ही मैं शीश झुकाऊँ

माँगू मैं तुमको ही तुझसे और न कुछ तुझसे मैं माँगू
देने वाला जब मिल जाए फिर तो मैं जग से क्या माँगू

प्रीत दिलों में सदा बसाऊँ भूल तुझे मैं कभी ना पाऊँ
देखूं मैं जिस ओर उधर ही तुझको ही मैं हरदम पाऊँ

तुमको हरदम दिल में बसाऊँ कभी विदा ना मैं कर पाऊँ
तेरे चरणों में ही गणपति जीवन अपना डूबा पाऊँ

❋

३. तुम ना समझ पाए

तेरे भावो में ही डूबा, रहा मैं तो सदा लेकिन
मेरे भावों की भाषा को, कभी तुम ना समझ पाए

मेरे भावुक ह्रदय से जो, निकलते हैं कभी आँसू
ह्रदय पावन के उस जल में , कभी तुम डूब ना पाए

कभी देखा था जो सपना, तुझे अपना बनाने का
वो सपने ही थे जीवन में, हक़ीक़त में न बन पाए

अंधेरे में ही रखा था, सदा जीवन को तुमने तो
उजाले की किरण को तुम, कभी दिल में न ला पाए

मेरे जीवन को तुमने भर दिया है, दर्द से लेकिन
उमड़ते दर्द को आखिर, कभी तुम ना समझ पाए

सदा ही अपने जीवन का, तुझे अमृत मैं कहता था
विषैला ही किया जीवन, कभी अमृत न बन पाए

सदा ही ख़ुश्बू फैलाई जगत में स्वार्थ की तुमने
महकती फूल की ख़ुशबू, कभी भी तुम ना बन पाए

सदा ही राग छेड़ा था मधुर संगीत का मैंने
मगर दिल में सजों करके, कभी ना गुनगुना पाए

सदा ही हार बैठा था, तूझी पर अपना ये तन मन
मगर दिल जीत ले, ऐसी लड़ाई लड़ नहीं पाए

❋

४. यह निर्णय हमको करना है

सच है क्या है गलत यहाँ पर राह कौन अपनाना है,
दिशा कौन सी चले यहाँ पर साथी किसे बनाना है,
क्या देखें क्या ना देखें वह दृश्य हमें ही चुनना है,
यह निर्णय हमको करना है।

बेबस सुंदरता के आगे स्पंदन क्या करना है,
मूल्य पर्स का नोट चित्र को या किताब को पढ़ना है,
सुरा सुंदरी केंद्र बिंदु किस परिधि में हमको रहना है,
यह निर्णय हमको करना है।

आसमान का बिछा बिछौना तारों की है रात सजी,
जग करके ही देख रहा हूँ जग की ये सुनसान गली,
राग अलाप ताप को ही या अवरोध का दंश झेलना है,
यह निर्णय हमको करना है।

पिता की सेवा दवा दुआ की पंक्ति यहाँ पर सजना है,
दुविधा सुविधा समिधा का भी ध्यान यहाँ पर रखना है,
या साजिश करके हमको केवल दलदल में ही फसना है,
यह निर्णय हमको करना है।

वीराना जंगल कर देना या हरियाली फैलाना है,
झूठों का साथ सदा देना या सच का साथ निभाना है,
संबंधों की रिश्तेदारी या पैसों पर ही मरना है,
यह निर्णय हमको करना है।

नशा नाश की जड़ होती है नशा भी चाहे जिसका हो,
चाहे ऊंचे पायदान पर नशे के मद में डूबा हो,
आसमान पर उड़कर भी हमें पैर ज़मी पर रखना है,
या मदिरा का सेवन करके हमें गड्ढे में ही गिरना है,
यह निर्णय हमको करना है।

❋

५. ख़्वाब का महल

बेकरारी दिलों की छुपाने लगे आग हाथों से अपने लगाने लगे
छा गया दिल में उसका नशा इस कदर ख़्वाब का एक महल हम बनाने लगे

जबसे दिल में मेरे उसकी ख़ुश्बू जगी, राग में उसके ही गुनगुनाने लगे
द्वेष का बीज मन में ना पनपा कभी पीके बिष उसको अमृत पिलाने लगे

तोड़कर ब्यूह मायूस इस उम्र का, घिर रही सांझ दीपक जलाने लगे
छोड़ धन को सदा भाव में डूब कर प्रेम का इक नया घर बनाने लगे

मेरा सपना खरीदूँ नए दर्द को त्याग कर पूँजी दुकाँ बनाने लगे
छोड़ कर ये जहाँ उस जहाँ में बसूं सोचकर ये लड़ाई हम लड़ने लगे

अपने दिल में ही मोती उगाऊँगा मैं सोच दिल में भरे सीप बनने लगे
कुछ नया पाने को दिल ये बेचैन है सबकी बेचैनियां अब समझने लगे

जिसमें मंडराये भंवरा कली पर कभी ऐसे गुल का शहर अब बसाने लगे
मान सम्मान पाने की इच्छा जगी प्रेम का हार दिल से बनाने लगे

❋

६. अभाव की पुत्री (चिंता)

हे अभावों से जन्मी चपल बालिके
अब मेरे घर ना आना तू फिर से कभी
मेरे जीवन में खुशियाँ ही छाई रहें
ना शिकन मेरे मस्तक पे लाना कभी
सुख की निद्रा में ही मुझको सोने दे अब
देके ठोकर ना फिर से जगाना कभी
मैं गमों में ना हरदम यहाँ पर रहूँ
आके इतना न मुझको सताना कभी
मैं तेरी मान लूं तू मेरी मान ले
मेल इतना तो मुझसे बिठाना सदा
दुख ना आए कभी मेरे जीवन में अब
ऐसा रिश्ता तू मुझसे निभाना सदा
कैसे सीखूँ तेरे बीच रहना यहाँ
आ के फिर से तू मुझको बता ना सदा
सबके जीवन में एक बार आती है तू
झुर्रियां माथ सबके दिखाती है तू
कौन अपना यहाँ और पराया है कौन
ज्ञान दोनों का आकर कराना सदा
कैसे चिन्ता में रह करके जीते हैं सब
हाल सब का मुझे भी बताना कभी
जो अभावों में डूबी ना हो चाँदनी
सबके जीवन के घर में बिछाना सदा

❋

७. गुलाब दे गया

जब देखा एक गुलाब तो, ये दिल मचल गया
काँटा नहीं था फिर भी वो, सीने में चुभ गया

कहते हैं लोग पंखुड़ी, कोमल गुलाब की
पर उसको छुआ जैसे ही, खंजर सा चुभ गया

ख़ुशबू ने उसकी दिल में घोली, मिश्री इस तरह
इतनी मिली मिठास की, वो शुगर दे गया

कितनी थी मीठी, ख़ुश्बू उसकी, क्या बताऊँ मैं
निगाहों से उसने दिल में मेरे, नशा भर गया

उसके लिए ही मैंने, सजाई थी महफिलें
वह दिल का हार बनके, मुझको फिर हरा गया

मैं सूर्य जैसा वह तो, चंद्र के समान थी
पर कल्पना में सूर्य को, पसीना आ गया

पा जाऊँ उसको मैं, निशाना साधता रहा
वो उलट करके मुझको, निशाना बना गया

सपने सुनहरे आँख में, सजते ही रह गए
वो गैर को ही अपना, ठिकाना बना गया

करती रही भ्रमण वो, दिल के बगीचे में
पर उसकी ख़ुश्बू को तो, कोई और ले गया

ख़ुश्बू जो उसके रूप की, पहले दिनों की थी
जीवन में भूल पाऊँ ना, वो एहसास दे गया

❋

८. प्रथम चरण बन जाओ

भाव में डूब कहता, दिल के द्वार आजाओ,
खुले प्रतीक्षा में पट, स्वस्तिक बना जाओ ।
तुम्हारी याद में, डूबी छलकती हैं बहुत आँखें,
भरे हुए हैं जो जल से, आचमन करा जाओ ।
हाथ जोडे़ खडे़ हैं, हम तो तेरे स्वागत में,
तिलक लगाके माथ, दिल अक्षत कर जाओ।
प्रेम के धागे को, दिल से कभी अलग न करो,
सदा ही दिल से लिपट, यज्ञोपवीत बन जाओ ।
मन मंदिर में मैं सदा, तेरी आरती उतारूँगा,
हृदय में प्रेम की, अखंड ज्योति बन जाओ ।
बिना महके हुए, मधुबन से खिले बैठे हैं,
अपनी सांसों से, कली में सुगंध भर जाओ ।
प्रेम के यज्ञ में, सब कुछ पवित्र हो जाए,
उठे धुए में महक, ऐसी धूप बन जाओ ।
उमड़ती वेदना, मिलने को, दिल के कोने में,
करुण पुकार सुन के दिल की, आज आजाओ ।
बन के साथी तुम्हारा, मैं चलूंगा जीवन भर,
सुखद एहसास दे, ओ राह के फूल बन जाओ ।
सदा महकाओगे अब, दिल का बगीचा मेरे,
शपथ की अंजुरी में, लेके जल को कह जाओ ।
पडे़ चरण तो, अपने को धन्य समझूँगा,
कवि का प्रथम चरण, आज आके बन जाओ ।
तुम्हारा भाव ही, काफी है, डूबने के लिए,
मेरी बनके तुम, अपना भाव मुझे दे जाओ ।
पीयूं मैं कब तलक, विष का प्याला, भोले बनकर,
मोहिनी रूप धर, मुझको अमृत पिला जाओ ।

❋

९. निगाहें ऐसी डालो तुम

निगाहें ऐसी डालो तुम कि दिल शीतल सा हो जाए,
भरे दिल प्रेम जीवन में सदा खुशियाँ बिखर जाएँ ।
रहे सब ही सुरक्षित इन निगाहों के ही घेरे में,
डूब कर प्यार में सबका ही मन दर्पण सा हो जाए ।
ना फैले नफरतें मन में कभी ना वासना फैले,
जुड़ा हो प्रेम से ही दिल भरा संकल्प हो जाए ।
सदा ही डूब भावों, प्रेम और व्यवहार से अपने,
तुम्हारे तन से ज्यादा आज सुंदर मन ये हो जाए ।
सदा मिलती रहे खुशियाँ तरोताजा विचारों से,
महकता सा ये जीवन भी सदा उपवन सा हो जाए ।
रहो सबकी निगाहों में सुरक्षा का कवच बनकर,
निगाहें प्यार में दर्शन सदा ईश्वर का हो जाए ।
सभी कहते ज़हर होता सदा नागों के फन में ही,
भरी तेरी निगाहें ही कहीं ना ज़हर बन जाए ।
सदा होठों पे धर मुस्कान हृदय को जीत लेना पर,
किसी के दिन उजाले ना अंधेरी रात बन जाए ।
डोलती इन निगाहों पर सदा ही ध्यान रखो तुम,
किसी का खिलता जीवन भी कहीं पतझड़ न बन जाए ।
किसी को भाव में ना डूब कर इतना पिलाओ तुम,
पिलाती ये निगाहें ना किसी की मौत बन जाए ।

❋

१०. जी न पाया

हंसी होठ से अपने सीने के ग़म को
छुपाना तो चाहा छुपा ही न पाया

मोहब्बत का अंजाम ऐसा भी होगा
ये जख़्मों की दुनिया समझ ही न पाया

लगा था की पाऊँगा हुस्न ए मोहब्बत
मिला ना कभी गुल सदा खार पाया

सदा ढूँढता ही रहा दिल की दौलत
फ़साना ग़मों का सदा हाथ आया

किताबें ये दिल की पढ़ी दिल से मैंने
मगर दिल ये क्या है समझ ही न पाया

भ्रमण तो किया दिल की बगिया में लेकिन
महक प्यार की मैं कभी ले न पाया

मोहब्बत नशा दिल को ऐसा नचाया
संभलना तो चाहा संभल ही ना पाया

सरकती रही ज़िंदगी धीरे-धीरे
जिया पर कभी ज़िंदगी जी न पाया

❊

११. बदल लेगा

नीयत है साफ जिसकी वो सदा सच देख ही लेगा ,
फँसा होगा भंवर में पर किनारा ढूँढ ही लेगा ।

विचारों को वो कर पावन सुखद संचार भर देगा ,
लगाकर डुबकियाँ गंगा में वो मन निर्मल सा कर लेगा ।

मिला जो भाग्य में उसके वही स्वीकार कर लेगा,
मिलेगी जिसको जो संगत वही सिंगार कर लेगा ।

भला हो या बुरा अपना सहारा ढूँढ ही लेगा,
बुराई के भंवर में भी ठिकाना ढूँढ ही लेगा ।

रहेंगे ज़िंदगी में मस्त मौला बनके ही दोनों,
मुसीबत में भी वो हालात अपने तो बदल लेगा ।

किसी ने मुझसे पूछा कि अगर वह राह से भटका ,
गिरा नाली में गर ख़ुशियाँ कहाँ से ढूँढ वो लेगा ।

अगर होगी बुरी नीयत बुराई में सना होगा,
गिरेगा नाली में जाकर शुअर की दृष्टि कर लेगा ।

❋

१२. मेरी तरफ

उसकी आँखों का इशारा होता अगर मेरी तरफ,
चाँद तारों का बदलता रूख सदा मेरी तरफ ।

लड़खड़ा गिरता कभी ना ज़िंदगी के मोड़ पर,
उसकी बाहों का सहारा होता अगर मेरी तरफ ।

मैं चमन के फूल जैसा रोज खिलता डाल पर,
देखती नज़रें सदा गर प्यार से मेरी तरफ ।

मुरझाता ना बगीचा ज़िंदगी का फिर कभी,
प्यार का ये जल कभी आता अगर मेरी तरफ ।

मैं अंधेरे में न रहता इस ज़माने में कभी,
रोशनी गर चाँद की होती कभी मेरी तरफ ।

मय भरी आँखें छलकती गर कभी मिल जाएं तो,
जाम पीने को सदा क्यों जाता मैं उसकी तरफ ।

ये ज़माना आज भी मुझको बुरा ही कह रहा,
सब ही उसके साथ हैं कोई नहीं मेरी तरफ ।

इस जमाने की ये नज़रें अब उठे मेरी तरफ,
देख कर के सच को गर तू बोल दे मेरी तरफ ।

❊

१३. मिल जाओ मोहन

मिल जाओ मुझको अब तो हे मोहन
तुझे रात दिन खोजते हम बहुत हैं
भर दो मेरे दिल में प्यार का सावन
बिरह में तेरे हम तो जलते बहुत हैं

अब तो हृदय में बस जाओ आकर
तुम्हें रात दिन याद करते बहुत हैं
चाहे प्रेम की ले लो परीक्षा हमारी
हे कान्हा तुम्हें प्यार करते बहुत हैं

वृंदावन में रमन करते हरदम
गोपियों संग रासलीला रचते बहुत हैं
सपने में ही आकरके मिल जाओ मुझको
सपने तो हम देखते भी बहुत हैं

एक बार बंसी की धुन तो सुना दो
संगीत को हम भी सुनते बहुत हैं
राधा के संग आके बस जाओ दिल में
दिल में जगह हम तो रखते बहुत हैं

सभी को है तारा जगत में हमेशा
तारण जगत के हो सुनते बहुत हैं
हमको भी तारो आकर के मोहन
विनती यही तुमसे करते बहुत हैं

❋

१४. फिर कब आओगे

सावन तुम फिर कब आओगे
शुष्क हृदय में कब छाओगे
फूल खिलेंगे दिल में कब तक
गुलशन बन कब महाकाओगे
सावन तुम फिर कब आओगे

दिल की बगिया सूख रही है
खुद ही खुद से रूठ रही है
स्वयं पुष्प अब खार बने हैं
जीवन के जंजाल बने हैं
मिट्टी की ही परत जमी है
धूल भी तपती रेत बनी है
दिल में बिरह की अग्नि जली है
सूरज जैसी तपन भरी है
बरसके भावो के जल को कब
दिल की तपन मिटाओगे
सावन तुम फिर कब आओगे

दिल ने ऐसी दस्तक दी है
नींद हमारी टूट गई है
जग-जग कर ही रहा देखता
अपनी अपनों से रूठ गई है
वो सच्चा था या झूठा था
आँखों ने जिसको देखा था
धड़कन बन करके मेरी कब
दिल को तुम समझाओगे
सावन तुम फिर कब आओगे

❋

१५. आकार में ढलते गए

शून्य था आकार सबका, कोख में सब शून्य थे
सृष्टि के विस्तार से, आकार में ही हो गए

आत्मा ने वस्त्र बदला, जाने किस-किस योनि में
जन्म पाया जिसमें, उस आकार में ही ढल गए

मृत्यु के पश्चात एवं, जन्म किसी योनि के
पहले निराकार फिर, साकार में सब हो गए

राह पर ऐसी चले, जिसका कभी ना कुछ पता
करके कुछ सत्कर्म सब, साकार जीवन कर गये

डर लगा बोझल हुआ मन, राह को ही देखकर
चलना पड़ता सब को ही, यह सोच यात्रा कर गए

है कहाँ जाना जगत से, ख़बर भी कुछ ना हुई
समझकर के ईश घर, विश्वास उस पर कर गए

❋

१६. बढ़ा दीजिए

जब गली में मेरे आप आ ही गए,
दिल से दिल आके अबतो मिला लीजिए ।

फूल ना मिल सका कोई ग़म ना करो,
हार बाहों का अपने बना दीजिए ।

जीत में ही खुशी सबको मिलती सदा ,
हार कर दिल को अब तो जीता दीजिए ।

देख लूं चाँद सा तेरे चेहरे को मैं,
अपने मुखड़े से पर्दा हटा दीजिए ।

हो गुलाबों से मीठी यहाँ वादियाँ,
ऐसी रौनक भी मुझको दिखा दीजिए ।

तुझको मागूँ सदा ज़िंदगी के लिए,
साथ मेरा तो हरदम निभा दीजिए ।

क्यों भटकती रहे गैर गलियों में ही,
इस गली को ही अपना बना लीजिए ।

इस गली का बहुत ही सरल रास्ता,
अपने कोमल चरण को बढ़ा दीजिए ।

❊

१७. मुझको

बेदर्द ज़माने की ठोकर से,
जब-जब मैं गिर जाता हूँ ।
देकर के सहारा बाहों का,
हर बार उठा लेता मुझको ।

होता उदास हूँ जब-जब मैं,
एकाकीपन के जीवन से ।
वो संबल देकर भावों का,
हर बार हंसा देता मुझको ।

जब-जब भी घिर जाता हूँ मैं,
अंधकार में अपने ही ।
वो प्रेम का दीप जला हरदम ही,
राह दिखा देता मुझको ।

भावो में खोकर के उसके, मैं
जब-जब दिल से हारा हूँ ।
वो हार के दिल हरदम अपना,
हर बार जिता देता मुझको ।

खोज को, जीवन में उसके,
जब-जब भी मैं भटका हूँ ।
हर बार फरिश्ता बन, ईश्वर का,
भान करा देता मुझको ।

❋

१८. सदा ही उल्लास

आज हम जलाएं प्रेम दीपक दिल के द्वार
जिससे प्रकाशित हो ये पूरा संसार

रहे न अंधेरा न अज्ञानता का वास
सब के दिलों में भरे प्रेम का प्रकाश

भाव हो पावन सबका प्रखर विचार
सब के दिलों में बहे शीतल बयार

दया माया ममता हो दिल में अपार
प्रेम का ही दीपक जलाये सदा संसार

कर्म धर्म नीति का हो मन में निवास
भाव जागे दिल में सभी के दिन रात

प्रेम की बसे दिलों में ख़ुश्बू अपार
कभी ना हो किसी के जीवन में खार

अधरों पे रख अपने मधुर मुस्कान
कोमल हृदय में करें प्रेम का संचार

मन में हो न कुंठा न दूषित विचार
त्याग प्रेम दिल में ही भरा हो अपार

छल दंभ ईर्ष्या ना आए कभी पास
होती रहे प्रेम की सदा ही बरसात

धरती से लेकर के पूरा आकाश
छाया हो जगत में सदा ही उल्लास

❋

१९. चमकता एक सितारा था

कभी हमने मुहब्बत से, उन्हें जी भर निहारा था
मगर पहचान ना पाए, जो आँखों का इशारा था

न था मंजूर क्या उनको, मेरे इस प्यार का किस्सा
देख कर स्वप्न कितने ही, जो आँखों ने सुनाया था

न उथला था, ना सूना था, ना मेरा प्यार मैला था
मगर मैं कैसे समझाता, गलत उसने जो समझा था

भरे विश्वास संकल्पों से, दिल का तार जोड़ा था
मानकर के उन्हें ईश्वर, सदा दिल में ही पूजा था

लहर उठती दिलों में जब, हिलोरे मार कर मेरे
उठे तूफान में भी, प्यार का, दीपक जलाया था

कभी हमने नहीं समझा, लालिमा सांझ की उनको
सदा खिलते हुए दिल में, गुलों का बाग समझा था

ख़ुद अपने रूप के थे वो, कोई ना रूप दूजा था
चला जादू जो दिल पर था, वह आँखों का नज़ारा था

नज़र थी सुरमई उनकी, डूब कर भाव में देखा
गगन पर छाया जैसा वो, चमकता एक सितारा था

❋

२०. नैतिकता हो

परिवर्तन हो सुखद सादगी
परख गुणो की व्यापकता
यश फैले उत्कर्ष लेखनी
प्रतिभा संग हो नैतिकता
प्राप्त करें संसार सदा ही
जो कृति गुण परिचायक हो
सदा जुड़ा जो प्रेम दिलों का
नैतिक गुण आधारित हो
सत्य भावना स्थाई
सौंदर्य प्रेम की जागृति हो
साहस सहनशक्ति आक्रामक
हृदय वेदना पावक हो
नित नए कोंपल खिले उपवन में
शुष्क हृदय की धरती हो
गरिमा सुचिता का ध्यान रहे
मन उगा भाव का सूरज हो
ज्ञान की ज्योति जले निशदिन
मन निडर और सिर ऊँचा हो
शबनम सी शीतलता आए
हृदय बना ओ शोला हो
भड़के चिंगारी देश प्रेम की
दिल में जगी भावना हो

अथक प्रयास करें जिससे
मंजिल लक्ष्य पूर्णता हो
विवेक जहाँ पुष्पित पल्लवित
विश्वास जहाँ पर पलता हो
पथ चलते पद चिन्हों को
सदा राह से इंगित करता हो
हे परमपिता तुम स्वर्ग बनाना
ऐसी निर्मल धरती को
जहाँ हर मानव के मन में ही
सद्भाव सदा ही उमड़ता हो

❋

२१. गुल खिलाओ

मिलाकर नैनो से नैना, करो बातें तो हम जाने
ना हो ओठो पे कंपन, मौन दो उत्तर तो हम जाने

समझ कर मन की पीड़ा को, बहाओ प्रेम की नदियाँ
भरा दिल प्रेम का सागर, जो छलकाओ तो हम जाने

अंधेरा घर बनाकर छिप रहा है, दिल के कोने में
जला दिल दीप दिवाली, मनाओ फिर तो हम जाने

कभी खिल करके आ जाओ, हृदय के इस बगीचे में
कली बनकर के खुशियों को, जो महकाओ तो हम जाने

भिगाकर तन बदन पूरा, डूब भावों के सागर में
प्रेम झोंको के संग बारिश, कराओ तो कभी जाने

धधकता है कभी जो दिल, बिरह की अग्नि में तपकर
चाँदनी रात शीतल सी, बनाओ तो कभी जाने

भरी ख़ुश्बू हो तपती रेत पर, खिलते जो पुष्पों से
नया एक रंग देकर के, खिलाओ तो कभी जाने

❋

२२. सुखमय सा संसार बने

दिल सबके सद्भाव जगे, कुंठित मन का भाव मिटे
सरिता बहे प्रेम की जिससे, पावन हृदय विशाल बने

सुख दुख एक जैसा ही देखें, मन में ऐसा भाव जगे
करुणा हृदय बसी हो सब में, मानवता का बीज उगे

फूले फले सभी जीवन में, सब में ऐसा फूल खिले
ईर्ष्या कभी न पनपे मन में, सब में प्रेम का दीप जले

सभी करें सहयोग सभी का, कर्तव्य मार्ग सब अपनाएँ
जिससे निर्मल हो यह जीवन, प्रेम सुधा ऐसी बरसे

उथला रहे कभी ना जीवन, सागर जैसा दिल ये बने
सदवाणी की ही अब सबके, मन में लहर तरंग उठे

स्निग्ध ज्योत्सना की आभा ही, अब पूरे जग में फैले
रुके कभी ना किसी का जीवन, बहे सदा झरना जैसे

निस्वार्थ भाव ही भरे सदा, भाव स्वार्थ का सदा मिटे
फीकी पड़े इत्र की ख़ुशबू, रिश्तों में ख़ुश्बू फैले

प्राप्त हुआ है जिसको जितना, उतना ही पर्याप्त बने
उपजे सदा संतोष हृदय में, सुखमय सा संसार बने

❋

२३. प्रकृति चित्रण

पीली पीली सरसों फुला के यहाँ चारों ओर
पूरे ही जहाँ के हर दिल में ही छाई है

उसी के बगल में ही मटर भी फुलाई हुई
छोटे श्वेत पुष्पों से जग हर्षायी है

अरसी चने का पौधा वो भी बड़ा सुंदर लागे
रंग-बिरंगा रूप सारी धरा ये नहायी है

गाजर लहसुन धनिया भी छटा को बिखरे हुए
मेथी मूली पालक यहाँ रंग जमाई है

हरे हरे गेहूँओ से भरे हुए खेत यहाँ
पूरे ही धरा पे हरियाली ही बिछायी है

उड़ती सुगंध यहाँ सब की ही अलग-अलग
घुल के पवन पूरा धरा महकायी है

गेंदा गुलाब मुर्गकेश यहाँ खिले हुए
हरसिंगार ने तो शोभा बढ़ाई है

रात रानी बेला यहाँ खिलकर रातों को
चंपा चमेली ने भी जग महकाया है

बार-बार देखूं इसे दिन और रात में भी
मन ने मेरे भी यही इच्छा जताई है

ऐसा ही सुंदर यहाँ गाँव का परिवेश होता
प्रकृति प्रफुल्लित होकर यहाँ मुस्कायी है

❋

२४. डरना पड़ा

देखा सब कुछ आँख से पर, डालना पर्दा पड़ा
कुछ नहीं मैं देख पाया, आज ये कहना पड़ा

ख़ौफ़ की कुछ मन में बातें, सोच कर डरना पड़ा
ये जुबा कुछ बोलती, पर आज चुप रहना पड़ा

रो पड़ा है दिल मेरा, प्रताड़ना को देखकर
जो कभी न सह सका था, आज वह सहना पड़ा

शर्म से सर झुक गया, अन्याय को ही देखकर
अन्याय के जब सामने ही, न्याय को झुकना पड़ा

जानता हूँ सच नहीं, पर सच है ये कहना पड़ा
जो छिपा था राज दिल में, राज ही रखना पड़ा

ऊँचे रसूख वालों ने, कुछ काम ऐसा कर नदियाँ
सत्य दबता झूठ से, इतिहास यह लिखना पड़ा

❋

२५. मतलब नहीं

जब घटाएं घिरें पर ये बारिश न हो
तब घटाओं के घिरने का मतलब नहीं
चू न जाए जो भावों में मादक नयन
ऐसे नैनों के भरने का मतलब नहीं

तान कोकिल जो कंठों से ना छेड़ दे
गीत झंकार भरने का मतलब नहीं
प्रीति का रत्न दिल में जड़ा गर ना हो
सोने चांदी पहनने का मतलब नहीं ।

जिस जगह पर सुनहरी मछलियों ना हो
जाल उसमें बिछाने का मतलब नहीं
ऐसे सागर में दिल भी न डूबे कभी
उसमें गोता लगाने का मतलब नहीं

भाव मिलने का दिल में जो उमड़ा ना हो
ऐसे दिल को मिलने का मतलब नहीं
भाव सागर में गर ना तरंगे उठे
ऊँची लहरों के उठने का मतलब नहीं

दर्द दिल ना किसी का दिखाई पड़े
खिड़की ऐसी लगाने का मतलब नहीं
आग दिल में लगी जो बुझा ना सके
ऐसी बारिश का कोई भी मतलब नहीं

❊

२६. ऋतु फागुनी आ गई

आज अपने गले से लगा लो मुझे
देखिए अब तो ऋतु फागुनी आ गई
मेघ की आज बारिश भले कम हुई
घुलती रंगों की बारिश तो फिर आ गई
प्रेम का रंग दिल पर तो ऐसे मलो
जिसकी रंगत कभी भी न फीकी पड़े
प्रेम का रंग ऐसा चढ़े तन बदन
जितना भीगे वो उतनी ही चढती रहे
फिर तो खिलती रहे रंग में डूब कर
मन के भावों में ही डूबती वो रहे
पर्व का भाव दिल में उमंगों का है
भाव में डूब कर भाव भरता रहे
भाव में डूबकर रंग ऐसा भरो
प्रेम हरदम शिखर पर ही चढ़ता रहे
हो किसी से न शिकवा शिकायत कोई
भूलकर सब गिला दिल ये मिलता रहे
प्रेम में डूब आँखें झलक जाएगी
प्रेम का रंग दिल में ही चढ़ता रहे
वो तो गाता रहेगा सदा नगमे को
डूब जो प्रेम की राग गढ़ता रहे
आज रंग दे तू मुझको उसी रंग में
तेरा रंग मुझ पे ही आज चढ़ता रहे
ऐसी खिलती रहे रंग में डूब कर
कि लगे फिर से ऋतु फागुनी आ गई
आज अपने गले से लगा लो मुझे

❋

२७. दिल का लगाव था

पीर दिल के अंदर थी, लहरों का शोर था
अपनों का साया भी, अपनों से दूर था
झूठ की अदावत थी, सच्चा ना प्यार था
सोचता हूँ किस्मत को, क्या यही मंजूर था
किस्मत भी ऐसी, कि झूठे थे रिश्ते
आँखों के सपने भी, लग रहे थे टूटे
उठ रहा जो दिल में, मेरे दर्द का ही भाव था
कैसे कहूँ आज उनसे, दिल का लगाव था ----

दिल का आज मौसम, क्यों रहा झुलसता
प्रेम था जो शीतल, तो क्यों रहा धधकता
फूल था वो दिल का, किसी बाग का नहीं था
क्यों रहा वो चुभता, कोई खार तो नहीं था
दूर रहकर भी दिल पे, करता जो वार था
कैसे कहूँ आज उनसे, दिल का लगाव था ---

उम्र की ये सीढी, हर पल ही घट रही है
ये जिस्म ज़िंदगी का, हर घूंट पी रही है
वो अपने में ही खोये, किसी का न साथ था
मिले जब भी मुझसे, दिखा स्वार्थ का ही भाव था
हक़ीक़त से वाक़िफ़ मगर, शातिर दिमाग था
कैसे कहूँ आज उनसे, दिल का लगाव था-----

❋

२८. फिर मिले ना मिले

आज अपने दिलों को मिला लीजिए
फिर ये धड़कन दिलों की मिले ना मिले
क्या पता कौन जाने कहाँ खो गया
ज़िंदगी में दोबारा मिले ना मिले

नफ़रतों से भरे रास्ते हैं बहुत
कब पनप जाए दिल द्वेष की भावना
थोड़ी बारिश पे मौसम बदल जाता है
फिर ये मौसम दोबारा मिले ना मिले

प्रेम सागर से गहरा है नभ से बड़ा
प्रेम की भावना दिल बसा लीजिए
दिल भरे प्रेम में आज तुम डूब लो
प्रेम का फिर ये सागर मिले ना मिले

क्यों तू धन के अंधेरे में खोया हुआ
साथ में तेरे कुछ भी नहीं जाएगा
सारी दौलत तुम्हारी रहेगी यहीं
चार गज का किनारा मिले ना मिले

आज सोचो विचारों जरा गौर से
नफरतों के शहर में तू क्यों खो गया
प्रेम की फैली चादर को तुम ओढ़ लो
फिर तो सुख की ये चादर मिले ना मिले

❊

२९. माँ का आँचल

याद आ रहा माँ का आँचल पलते थे जिस आँचल में
जब-जब संकट आ जाता था बच जाता था आँचल में
बचपन में जीवन दिखता था तो केवल माँ के आँचल में
नहीं कमी दिखती कोई जब रहते माँ के आँचल में
बाहर खेल खेल में जब हम आपस में लड़ जाते थे
मार के दूजे को चुपके से घर जाकर छुप जाते थे
अगर दौड़कर पीछे से वह आ जाता था घर में तो
मैं भी दौड़ के छिप जाता था अपनी माँ के आँचल में
तब माँ का आँचल ही बनता था एक सहारा जीवन में
नहीं कभी भी भय होता जब रहते माँ के आँचल में
रातों में सोने के पहले माँ कोई कहानी बुनती थी
सुनकर करुण कहानी उनकी आँख मेरी भर आती थी
कुछ किस्से को सुनकर के हम अंदर से डर जाते थे
चिपक ठिठुर कर छिप जाता था अपनी माँ के आँचल में
बचपन में लगती बहुत चोट जब उछल कूद हम करते थे
मरहम पट्टी वह कर देती थी फूँक फूँक कर होठों से
ठीक हो गया रो मत फिर छुपा लिया जब आँचल में
दर्द हमारा ठीक हो गया प्यार मिला जो आँचल में
आँचल से बढ़कर कवच सुरक्षा कोई नहीं हो सकती है
माँ के आँचल में हरदम स्थान सुरक्षित होता है
माँ का आँचल ही जीवन का बुलेट प्रूफ हो सकता है
बुलेट प्रूफ तो जीवन का होता है माँ के आँचल में
कष्ट हुआ यदि मुझे कभी तो खुद माही रो लेती थी
वह मेरी हर गलती को अपने सिर पर रख लेती थी
निस्वार्थ भाव ही भरा हुआ होता है माँ के आँचल में
स्वर्ग तो जीवन का होता है केवल माँ के आँचल में

❋

३०. सोच लो

जा रहे हो तो जाओ मगर सोच लो
दूर हमसे कहीं भी ना रह पाओगे
याद जब जब हमारी तुझे आएगी
आँसुओं से पलक को भीगा जाओगे

प्यार सच्चा मैं करता हूँ तुमसे यहाँ
प्यार ऐसा कहीं भी नहीं पाओगे
तुम तो तड़पोगे हरदम मेरे प्यार में
दर्द दिल की दवा तुम कहाँ पाओगे

हो गए आज क्यों मुझसे इतना ख़फ़ा
मेरी गलती है क्या कुछ तो बतलाओगे
बात सोचोगे तुम जब मिलन की कभी
देर होगी बहुत फिर तो पछताओगे

सूनी सूनी सी राहें ही होगी तेरी
बहार जीवन की तुम फिर कहाँ पाओगे
तुझको तड़पाएगी मेरी यादें वहाँ
तुम मेरे बिन वहाँ पर ना रह पाओगे

प्यार तेरा मेरा जब अधूरा रहे
कैसे अपनी कहानी को गढ़ पाओगे
साथ रहने की कसमें जो खाईं यहाँ
फिर तो कैसे उसे तुम निभा पाओगे

चाहने वाले तुझको मिलेंगे बहुत
आँखों से जब तुम उनसे उलझ जाओगी
देर होगी बहुत जब समझ आएगी
फिर ना चंगुल से उनके निकल पाओगे

जब चलोगे हमेशा ही संग संग मेरे
फूल बनकर चमन में तो खिल जाओगे
ख़ुशनुमा होगा मौसम हमेशा यहाँ
मेरे जीवन में आकर जो छा जाओगे

होगी कोई कमी ना जगत में कभी
मेरी बाहों में जब तुम सिमट जाओगे
हंस पड़ेगी यहाँ वादियाँ फूलों की
प्यार में डूब मुझसे लिपट जाओगे

❋

३१. खुश्बू की बगिया

पुष्प कर्मों से अपने ही खिलते रहेंगे,
कली बन के हरदम महकते रहेंगे ।
भले टूट कर के बिखर जाएँ जग में,
मगर बनके तारे चमकते रहेंगे ।

भले ही दिशाएँ भी हो जाएँ ओझल,
तीर सीधे निशाने पे सधते रहेंगे ।
भले बन न पाऊँ चमकता सा सूरज,
मगर जुगनू जैसे चमकते रहेंगे ।

भले मेरा हो जाये जीवन अमावस,
उदित पूर्णमासी सा होते रहेंगे ।
ना खाली रहेगा कोई दिल का कोना,
सदा प्रेम दिल में ही भरते रहेंगे ।

कदम न रुकेंगे कभी सत्य पथ पर,
सदा सत्य की राह चलते रहेंगे ।
जुबां ये भले मौन हो जाए मेरी,
मगर दिल की आहट को सुनते रहेंगे ।

बसेरा जहाँ पर हो इस ज़िंदगी का,
वहीं प्रेम का भाव भरते रहेंगे ।
भरके हरियाली दिल में ही सबके,
बनके ख़ुश्बू की बगिया महकते रहेंगे ।

❊

३२. चकाचौंध सी ज़िंदगी !!

चकाचौंध सी ज़िंदगी में
तीव्र तम हैं सिसकियाँ
घर है आलीशान बंगला
चमकती हैं खिड़कियाँ
बुझ गई है लौ दिए की
धूमिल हुई है चाँदनी
रात भी अब दिन बने हैं
धन कमाने के लिए
नहीं भरता एक से मन
दो चार होने चाहिए
नई गाड़ी नया बंगला
एक और होना चाहिए
भरा है मन में विष यही
विष भरा अभिमान है
एक हम ही हैं यहाँ
न दूसरा कोई संभ्रांत है
स्वाभिमान का पता नहीं
ईर्ष्या है शबाब पर
बहुरूपीऐ से हो गए हैं
चाल चलन संसार के
सब्र टूटा धैर्य टूटा
पर भ्रांतियाँ टूटी नहीं
छूट गया है सब यहाँ पर
लालच ही छूटी नहीं

❃

३३. समझा

सच को जब हमने समझा तब,
झूठा भी हमने समझा
देख पराए धन को मैंने,
कभी नहीं अपना समझा

जिसको जैसा देखा मैंने
उसको मैंने वैसा समझा
दिमाग लगाने वालों को तो
मैंने हरदम बौना समझा

भौतिकता की दौड़ में अब तो
सबको तेज दौड़ता समझा
समझा नहीं वो रिश्तेदारी
जिसने सब कुछ पैसा समझा

मोती उसकी झील सी आँखें
हरदम मैंने दरिया समझा
समझ नहीं आया मुझको क्यों
झरने को दरिया समझा

मुझे शौक है चुप रहने का
सब ने मुझ को गूँगा समझा
जिसको जान से ज्यादा माना
उसने मुझसे खतरा समझा

जो भी चीज मिली जीवन में
उसको मैंने अपना समझा
दूर ना हो अब जीवन में वो
जिसने हमको अपना समझा

जितना मिला मुझे जीवन में
उतने में खुश रहना समझा
लूट के भर ले धन दौलत जो
उसको मैंने पशुता समझा

❋

३४. पर्याप्त होना चाहिए

आँखों में आँसू नहीं, मुस्कान होनी चाहिए
ग़म में रहकर भी ख़ुशी का, भाव होना चाहिए

एक सा जीवन किसी का, हो नहीं सकता कभी
होता परिवर्तन सुखद, यह भान होना चाहिए

ज़िंदगी ठोकर न देती, तो संभलते ना कभी
ठोकरों का तो हमें भी, ज्ञान होना चाहिए

टूट ना जाएँ ये रिश्ते, अब तलक जो हैं बने
दिल के रिश्तों को दिलों से, मान होना चाहिए

कम से कम में भी बीतेगा, खुशियों सा जीवन तेरा
प्राप्त है जितना वही, पर्याप्त होना चाहिए
उफनते मझधार में, मिल जायेगा साहिल तुझे

नौका चलाने के नियम का, ज्ञान होना चाहिए
मुरझाएगा ना जीवन, का बगीचा फिर कभी
सींचने को प्रेम की, जलधार होनी चाहिए
गर चाहता है चाँद सूरज, की चमक तेरी बने

ना निगाहों में किसी के, खार होना चाहिए
खुद संवर जाएगी उस दिन, ज़िंदगी तेरी यहाँ
मैं बुरा हूँ इस बात का भी, ज्ञान होना चाहिए

❋

३५. सादगी का सिंगार

आँखों में प्यार लिए, होंठो पे मुस्कान लिए
भाव में भरी हुई, वो पास चली आती है

अंजन की धार लिए, आँख में कटार लिए
सादगी का करके, सिंगार चली आती है

साँसों में बिखेर कर, ख़ुश्बू वो प्यार की
दिल में वो भर के, बहार चली आती है

नींद में भी डूबे हुए, दिल में संजोए हुए
बनकर रातों का, वो ख़्वाब चली आती है

मतवाली चाल चले, मादक नयन भरे
सब पे लुटाती अपना, प्यार चली आती है

प्रेम के ही नशे में, सबको मदहोश करके
छलकाती जैसे कि, शराब चली आती है

पूछते हैं लोग जब, कि कैसा है मोहब्बत नशा
बन के हर प्रश्न का, जवाब चली आती है

❋

३६. मिल गई ज़मीं

फूल कैसा भी हो हर हाल में वो महकेगा
मिल गया जिसको सितारा हमेशा चमकेगा

दिल की गहराइयों में डूब कर के तुम देखो
भरा जो प्रेम का दरिया कभी तो छलकेगा

फूल की एक-एक पंखुड़ी को जोड़ो तो
तेरा जीवन सदा फुलवारियों सा महकेगा

मिली दुआएँ जितनी तुझको तेरे कर्मों से
ज़िंदगी में सदा ही अपना असर छोड़ेगा

तेरा जीवन ही इक रोज महल बन जाए
कर्म ही पूजा होती है अगर तू समझेगा

सारी ख़ुश्बू जगत में यदि बिखेरना चाहो
तेरे कर्मों से ही जीवन ये तेरा महकेगा

कोई ना रोक सके आसमाँ को छूने से
गर कदम अपने सदा ही ज़मीं पे रखेगा

❋

३७. याद आती है

कभी उठती थी वो पलके कभी वो झुक भी जाती थीं
करूँ मैं याद जब उनको, मुझे तड़पा भी जाती थीं
कभी सोचूं जो वो बातें दिलो में आह उठती है
ये दिल होता मेरा भावुक अश्रु की धार बहती है
नहीं मुझको मिलेगी तू ये बातें जानता हूँ मैं
मगर दिल मेरा ऐसा है भुला तुझको ना पाता हूँ
गई थी छोड़ मुझको जब साथ तेरा ये छूटा था
सदा ही याद कर तुझको मैं अंदर से ही टूटा था
मिला सारा जहाँ मुझको मुझे तू ही न मिल पाई
भरी जो भावना दिल में निकल आँखों में भर आई
कमी कोई नहीं मुझको कमी तेरी यहाँ पर है
बसा करके तेरी यादें मेरे दिल में अभी तक है
दिलों की बात अपनी मैं यहाँ किसको सुनाऊँगा
जो बातें तुझसे की थी वो किसी से कह न पाऊँगा
तू मेरे दिल की रौनक थी तू ही हमराज थी मेरी
तुम्हीं से राग मेरा था तुम्हीं से साज मेरा था
मिला करके मुझे ईश्वर अलग क्यों तुझसे कर डाला
जन्म भर का जो रिश्ता था अभी ही तोड़ क्यों डाला
किया तूने जो वादा था उसे तुझको निभाना था
छोड़कर क्यों गए मुझको साथ अपना निभाना था
बरस बीते कई पर याद तेरी अब भी ताजा है
यहाँ किसको दिखाऊँ मैं जो अन्दर की निराशा है
गूंजे भाव दिल में जब दिमागों में तू छाती है
मैं रो लेता हूँ अंदर ही जो तेरी याद आती है

❋

३८. ज्योतिर्मान है हिंदी

जगत की शान है हिंदी मेरा अभिमान है हिंदी
हमारी मातृभाषा देश की पहचान है हिंदी

हुआ है जन्म संस्कृत से संस्कृति की जो पोषक है
भरा जिसमें है सब रस गुण उसी की खान है हिंदी

भरे सम्मान गरिमा दिल करे पावन सा जो तन मन
हृदय की हर उमड़ती भावना का भान है हिंदी

भरी सागर सी गहराई है इसके वर्ण अक्षर में
हमारे ज्ञान की व्यवहार की पहचान है हिंदी

है भाषा भव्य भारत की जणित शृंगार रत्नो से
सतत करता प्रकाशित जो वो ज्योतिर्मान है हिंदी

करे जो भाव गुंजित मन हिलोरे मार कर दिल में
सजग प्रहरी सा बन रक्षा करें सद्भाव है हिंदी

लिखे जो भी वही बोले न कोई भेद है इसमें
भरी जिसमें है ये ख़ुश्बू वो चंदन दीप है हिंदी

मिला लेती है जब सुर ताल को भावों में खो करके
करे झंकृत जो तन मन को वो वीणा तार है हिंदी

विलक्षणता भरी कितनी है आभा कितनी मौलिकता
दिलों में भर दे जो उत्सव वही त्यौहार है हिंदी

❋

३९. धन के पीछे भागा ऐसे

धन के पीछे भागा ऐसे,
धन ही जैसे जीवन है
लंबे-लंबे डग को भरता,
बीता सारा जीवन है
नहीं मिली सुख शांति यहाँ,
बस धन की चिंता बनी रही
लोक लाज मर्यादा छोड़,
लालच ही दिल में बसा रहा
सम्मान बेचकर आज यहाँ मैं,
सुख की आशा करता हूँ
इस जीवन से कैसे उबरूँ ,
विचार कभी ना करता हूँ
पहुँचा हूँ मैं गर्त में अब तो,
अहंकार को साथ लिए
कुचल के सब मर्यादा अपनी,
आँख अश्रु की धार लिए
पहुँच गया मैं उसी गली में,
सपनो का अरमान लिए
डूब गया हूँ गर्त में धन के,
इच्छा का सामान लिए
जानबूझकर ही पैरों पर,
आज कुल्हाड़ी मारी है
लोक लाज से ऊपर उठकर,
धन की इच्छा भारी है
टकराकर के जीवन से जो,
लहर दिलों ने मारी है
टूट चुका मैं अंदर से
ये जीवन की लाचारी है

❊

४०. गौरा के संग

शीश जटा और चंद्र विराजे गले भुजंग लपेटे हुए हैं
माथे पे हैं जो त्रिनेत्र विशाल उसी से सभी को निहार रहे हैं

कान में कुंडल हाथ त्रिशूल निश दिन डमरू बजाई रहे हैं
जब-जब हो जाते मतवाले तब तब शिवजी नाच रहे हैं

शिव की जटा के ऊपर ही भाल शोभित चंद्र रहे हैं
खुश होकर के पावन गंगा जटा में शिव की नाच रही हैं

करते हैं जो बैल सवारी भांग धतूर ही खाई रहे हैं
पीकर विष का प्याला शिवजी पूरे जगत को बचाई रहे हैं

नीलकंठ शिव भोले बाबा मसान भभूति लगाई रहे हैं
ओढ़ के मृग छाला को यहाँ पर गौरा के संग विराज रहे हैं

❋

४१. डूब जाता हूँ

वो होती पास में जब-जब खुशी में डूब जाता हूँ
उन्हीं को देखकर के गम मैं सारा भूल जाता हूँ

कभी जो सामने होती नज़र से जब नज़र मिलती
नज़र में खोकर नज़रों को हटाना भूल जाता हूँ

मिलेगी जब वो मुझसे तो करूँगा प्यार की बातें
मगर जब सामने होती तो कुछ भी कह न पाता हूँ

मुझे हँसना मुझे रोना मेरे दिल ने सिखाया है
कभी मिलता हूँ दिल से जो तो दोनों भूल जाता हूँ

कसक उठती दिलों में जब भी उसको पास पाने की
वही बस याद आती सारी दुनिया भूल जाता हूँ

फिरा करता हूँ समझाने की दिल पर जोर मत डालो
मगर जब ख़ुद पे पड़ती है तो सब कुछ भूल जाता हूँ

❋

४२. उड़ान

कदम हमेशा ज़मीं पर रखो
भले गगन में उड़ान भर लो

बना न घर आसमाँ किसी का
दिलों में सबके मकान कर लो

उड़ो मगर इतना ध्यान रखो
जगह दिलों में तलाश कर लो

जगा के दिल में प्यार सभी का
जगत में पूरे ही नाम कर लो

जगत में पैसा ना बाँट पाये
ग़मों को ही सबके बाँट लो तुम

कमी ना होगी कभी तुझे फिर
ख़ुशी को सबके ही नाम कर लो

अगर चलोगे जो राह सच की
मिलेगी मंजिल यक़ीन कर लो

अंत हुआ है यहाँ सभी का
तुम याद इतना ही आज कर लो

क्षणिक सा होता गुबार मन का
बने हो मानव गुमान कर लो

त्याग प्रेम दिल सदा ही भर कर
विशाल सागर सा दिल ये कर लो

लगे ज़मीं ना परायी तुझको
सदा ही ऐसी उड़ान भर लो

❋

४३. रहस्य

जब से उनको गले लगाया दिल को ये एहसास हुआ
पहले था मरुस्थल जैसा अब जाकर गुलजार हुआ

प्यार सदा ही एक दूजे के जीवन का संबल होता
डूब गया जो दिल उसमें तो जीवन ये सुख मय होता

ख़त्म हुआ तब दर्द दिलों का जीवन में उम्मीद जगी
सदा संजोया दिल के अंदर तब जाकर के प्रीत जगी

अनदेखा छुआ जगत का भाव हृदय में जब छलका
तोड़ के सब सीमाओं को अनुभूत हृदय में तब झलका

न होती कोई तन की रेखा न मन की कोई रेखा है
बधा जो मन में प्रेम का धागा वही प्रेम की रेखा है

पाया उसका प्रेम मैं जब से जीवन भरी रवानी है
भाव नदी में तैर रहा हूँ जीवन की यही कहानी है

❊

४४. तो अच्छा था

मुझे अपने ही दिल में तुम बसा लेते तो अच्छा था।
मेरा बिखरा हुआ जीवन सजा देते तो अच्छा था।।

सदा दिल में बसा रहता तुम्हारी धड़कनें बन कर,
दिलों से दिल की धड़कन को मिला लेते तो अच्छा था।

कभी ना कुछ कमी रहती अगर तुम पास में होते,
दिलों में छाया सूनापन भगा देते तो अच्छा था ।

तेरे हर लफ्ज से दिल में मधुर संगीत जो फूटे,
अगर कुछ राग नगमे के सुना देते तो अच्छा था।

उलझ कर व्यर्थ की बातों में दिल को तोड़ते क्यों हो,
दिलों से दिल का समझौता करा देते तो अच्छा था ।

मेरे दिल को सदा ही दिल से अपने जोड़ कर रख लो,
कभी टूटे न जो रिश्ता निभा लेते तो अच्छा था।

मैं सारा ही ज़माना छोड़ देता प्यार में तेरे,
भुलाकर रंजो - ग़म अपना बना लेते तो अच्छा था ।

❋

४५. तब तक दीप जलाऊँगा

जब तक साँसे रहेंगी मेरी तब तक दीप जलाऊँगा
चौबारे का बनकर दीपक दूर अंधेरा भगाऊँगा

ज्ञान का तेल प्रेम की बाती कभी भी घट ना पाएगी
स्वच्छ धवल नित चाँदनी जैसी शीतलता छा जाएगी

पहला दीप तेल का होगा जिससे अंधेरा छट जाए
दूजा दीप प्रेम का जिससे भाव दिलों में भर जाए

ज्ञान का दीप तीसरा होगा भाव प्रखरता भरने को
चौथा दीप कर्म का जिससे जीवन में रस भर जाए

दीप पाँचवा मानवता का शांति सुधा बरसाएगा
बुद्धि भाव धीमान हुए तो जग सुंदर बन जाएगा

घर आँगन अंतस तन मन में प्रेम की अलख जगाऊँगा
जब तक सांसे रहेगी मेरी तब तक दीप जलाऊँगा

महलों में केवल दीप जले कुनबो में अंधेरा छाये
अधियारा इस पूरे जग का जब तक न मिट पाए

रहे अधूरा दीप अगर वह महलों तक रह जाएगा
रह जाएगा दीप अधूरा दीपक ना कहलाएगा

पूरे जन मानस का दीपक बन प्रकाश फैलाऊँगा
जब तक साँसें रहेगी मेरी तब तक दीप जलाऊँगा

❋

४६. सच्चा इंसान मिला

मैंने तुमको पाया जब से एक नया संसार मिला
रोम-रोम में खुशियाँ भर गई जब से तेरा प्यार मिला

रोज बसंती पवन - चली चारों ओर खुशी का साज मिला
फूल ही फूल खिले दिल में कभी काँटो का ना ताज मिला

पग पग हरदम साथ चलें हम ऐसा तेरा साथ मिला
नहीं कभी ग़म मिला मुझे तो ख़ुशियों का भंडार मिला

स्वच्छ धवल नित चाँदनी जैसा मुझको सुख का धाम मिला
हरियाली छाई दिल में और शीतलता का भाव मिला

भावो में जब डूबे दोनों भावों को विस्तार मिला
बातों में मिश्री घोली जब प्रेम का दिल संचार हुआ

नैनो में जब डूब गए तब सागर का एहसास हुआ
मुझको तो जीवन में अब एक सच्चा सा इंसान मिला

❋

४७. याद करूँ

मैं भी तुमको याद करूँ और तुम भी मुझको याद करो
प्यासा जीवन रह ना जाए रिमझिम सी बरसात करो

छुपा के रखा प्यार दिलों में कभी बता ना पाया
दिखा दिया आँखों ने सब कुछ राज छुपा ना पाया

डूब के भावों से ही दिल में प्रेम का अब संचार करो
मैं भी तुमको याद करूँ और तुम भी मुझको याद करो

वह दिन होगा सुखदाई जब मुझसे मिलने आओगे
धधक रही सीने के अंदर आग उसे जो बुझाओगे

बिछड़ के मुझसे दूर हुए क्या याद नहीं आती मेरी
आस लगाए कब तक बैठूँ देख देख राहे तेरी

हाँ या ना में उत्तर देकर हाल दिलों का बयाँ करो
मैं भी तुमको याद करूँ और तुम भी मुझको याद करो

भावो में दिल डूब के कहता अब बसंत तुम लाओ
खिल जाए फूलों की वादी ऐसा प्यार जताओ

रह ना सकूँगा तेरे बिना अब इस पर जरा विचारों
भावों में ही डूब के अब तो सपनों में खो जाओ

पाले हैं सपने जो दिल में उसको तो साकार करो
मैं भी तुमको याद करूँ और तुम भी मुझको याद करो

❋

४८. मेरी इच्छा

कष्ट किसी को भी ना पहुँचे मेरे मन एवं कर्मों से
मन वाणी और कर्म को अपने हरदम रखू संयम में

हिंसा से मैं बचूँ हमेशा अहिंसा का पथ अपनाऊँ
सत्य मार्ग पर चलूँ हमेशा असत्य सदा ही ठुकराऊँ

उचित अनुचित में करके भेद उचित मार्ग मैं अपनाऊँ
नैतिक मूल्यों का पतन ना हो नैतिकता को ही अपनाऊँ

गलत बात यदि करे कोई ना बचन को अपने कठोर करूँ
सत्य मार्ग को अपना करके दृढ़ता से प्रतिकार करूँ

फिर भी समझ नहीं पाया तो अंदर अपने मौन रखूँ
एक ना एक दिन समझेगा वह मन में अपने धैर्य धरूँ

सबके अंदर भाव जगाऊँ सबको अच्छी राह दिखाऊँ
प्रेरित करके सब के दिल को सब में प्रेम का दीप जलाऊँ

भाव प्रभाव प्रबल होता है रखूं भाव हरदम निर्मल
डूब के भावों में ही अपने करूँ ये जीवन मैं उज्जवल

❋

४९. बहुत कठिन है

विस्तृत लिखना भले कठिन हो
कम लिखना तो बहुत कठिन है
भाव उजागर हो सब मन के
शब्द पिरोना बहुत कठिन है
भरा हो शब्दों में भाव जितना
उसे समझना बहुत कठिन है
उमड़ रही भावना हृदय की
पटल पर लाना बहुत कठिन है
लिखा है वेद ऋचाओ में जो
परख सर्जना बहुत कठिन है
सकल चराचर में जो समाये
उन्हें दिखाना बहुत कठिन है
परंपरा जो बनी है जग में
संजोए रखना बहुत कठिन है
बिन मौसम बसंत ऋतु आए
भाव जगाना बहुत कठिन है
बदल ही जाता समय समय पर
समय बदलना बहुत कठिन है
जो रख हथेली पे सच को बोले
फरिश्ता मिलना बहुत कठिन है
जो राह सच के ही द्वार जाए
उस राह पे चलना बहुत कठिन है
भले ही देखे हों आँख से पर
जुबां खोलना बहुत कठिन है
धनो में डूबा है रात दिन जो
निभाना रिश्ता बहुत कठिन है
आँसू पी लेना भले सरल हो
पीकर मुस्काना बहुत कठिन है

❋

५०. हजार खूबियां

उसकी आँखों में मैंने उठता वो मंजर देखा
घाव दिल में बनाते आँख का ख़ंजर देखा
करके तिरछी निगाहें ओठ पे मुस्कान लिए
खिलते महलों को बनाते हुए खंड़हर देखा
प्रेम दर्शाके सितारों के जैसी आँखों से
सबके दिल में बनाते उसको अपना घर देखा
दर्द अरमानों का ही दिल में जगाकर सबके
प्यार को दिल में सूफियाना पलते ही देखा
उजाले दिन को और रात चाँदनी करती
आँख नाजुक कली में प्रेम की ज्वाला देखा
जिसको पाने को मन में सपने सजाए रहते
रहे वो ख़्वाब हक़ीक़त ना बनते देखा
जिसको देखा भी नहीं अब तलक तो जी भरके
रास्ते बीच में ही छोड़ के जाते देखा
डूबकर नज़रें ढूंढती हैं जिसको भावों में
दिल में खिलते हुए उस फूल को खोते देखा
खिला ना बाग में पर फूल दिल में ऐसा खिला
करता मदहोश सबको ही शराब सा देखा
स्याह सी जुल्फ हंसी लब गुलाबी आँखों में
हजार खूबियां देखी कमी वफ़ा देखा

❋

५१. प्रेम का दीप

लौट कर आओगी मुझसे मिलने यहाँ
मेरे मन को तो आशा दिला दीजिए
है अँधेरा भरा जो हृदय में मेरे
प्रेम का दीप दिल में जला दीजिए

मैं मचलता फिरू मैं बहकता फिरूँ
ज़ख्म ऐसा ना कोई हमें दीजिए
कितनी मुद्दत से अब जाके भूला हूँ मैं
दर्द फिर से ना मेरा हरा कीजिए

तेरे गीतों को ही अब मैं सुनता रहूँ
गीत ऐसा कोई गुनगुना दीजिए
गीत गाता रहूँ राह तकता रहूँ
अपने आने का कुछ तो सिला दीजिए

मैं अगर जब थकूँ देख राहें तेरी
अपनी साँसों की ख़ुशबू मुझे दीजिए
मैं भटक जाऊँ राहों में ना अब कहीं
अपने घर का मुझे तो पता दीजिए

याद में ही अगर मुझको जीना पड़े
अपनी तस्वीर मुझ में बना दीजिए
मिलने आऊँगा जीवन में जब भी कभी
अपने पलकों को दर पर बिछा दीजिए

हो सके जिस तरह तेरा मेरा मिलन
कोई तरकीब ऐसी बता दीजिए

❋

५२. देख लेता हूँ

ये सागर जब छलकते हैं तेरे नाजुक सी आँखों से
उमड़ते भाव के दरिया में अक्सर डूब जाता हूँ
ज़रा सा भी पड़ा गर दुख जो जीवन में कभी तेरे
भुने पापड़ के जैसे मैं तो अक्सर टूट जाता हूँ

कभी तो दिल से वो खेले कभी वो स्वार्थ में खेले
खिलौने मिट्टी का बनकर मैं अक्सर टूट जाता हूँ
कभी आगे वो चलते हैं कभी पीछे वो चलते हैं
मगर मैं साथ में चलकर भी अक्सर छूट जाता हूँ

नहीं मुझको पता आगे की कैसी राह होगी अब
देख कर अनगिनत सपनों में अक्सर डूब जाता हूँ
अकेलेपन का जीवन भी कोई जीवन नहीं होता
सोच कर ऐसी बातों को मैं अक्सर ऊब जाता हूँ

भरोसा ख़ुद पे ही कर लो कभी ना गैर पर करना
बताई जो गई बातें मैं अक्सर भूल जाता हूँ
यहाँ पर चाल धोखा और नफ़रत जो भरी सब में
घिनौने रूप को मैं देख अकसर टूट जाता हूँ

किया है जो यहाँ अन्याय मेरे संग जो जितना
क्षमा करके उसे मैं मन से अक्सर भूल जाता हूँ
मेरे सुख-दुख में साथी औ सहारा जो भी बनता है
उसी के रूप में भगवान को मैं देख लेता हूँ

❋

५३. रह गए

ज़िंदगी रेत टुकड़ों सी बहती गई
सब किनारे खडे. देखते रह गए

जब भी चाहा किनारे को मैं देख लूँ
सब बहे हम किनारे खडे. रह गए

कोई पतवार मुझको मिला ही नहीं
बीच मझधार में डूबते रह गए

कुछ समझा न जाना ये जीवन है क्या
ये पहेली सदा बूझते रह गए

कारवाँ मेरे जीवन का बढ़ता रहा
हम अकेले खडे. के खडे. रह गए

कुछ भी अर्जित जगत से न मैं कर सका
बस इसी प्यास के प्यासे हम रह गए

अपने अंदर की ख़ुशियाँ ना देखी कभी
ढोंग बाहर के ही देखते रह गए

मन का मोती न खोजा दिलों से कभी
हीरे मोती सदा खोजते रह गए

यह जीवन कभी पूर्ण ना हो सका
पूर्णता जीवन की लिखते रह गए

पूर्ण जीवन की जब ये कहानी हुई
सारे अरमााँ धरे के धरे रह गए

❋

५४. उलझा रहा

एक दिन इस ज़िंदगी ने रोते मुझसे ये कहा
स्वर्ग सी इस ज़िंदगी में नर्क सा जीता रहा

स्वर्ग सी इस ज़िंदगी में क्यों ना सदा जीता रहा
इतनी उलझी ज़िंदगी में तू सदा उलझा रहा

और पा जाने की इच्छा मन में तू करता रहा
तृप्त होकर भी यहाँ न तृप्त हो पाए कभी

ज़िंदगी क्या चीज है ना समझ पाए कभी
ज़िंदगी को ज़िंदगी सा मान तूने ना दिया

धन को ही सब कुछ है समझा साथ मेरा ना दिया
भूख इच्छाओं की तेरी भूख बनकर रह गई

ज़िंदगी गुजरी नहीं बस उम्र ढलती रह गई
धन की इच्छा ने ही तुझको अलग मुझसे कर दिया

ज़िंदगी क्या चीज है उसको समझने ना दिया
डूब करके भ्रम में कहते ज़िंदगी जीता रहा

सब जीवन से हारे हैं तो कैसे तू जीता रहा
तू तो हरदम ही यहाँ पर अपने में उलझा रहा
मैं ही तुझको जी रही हूँ तू ना मुझे जीता रहा

❊

५५. गंगाजल बनाऊँगा

दिलों में जिनके हूँ अब तक दिलों में उनको रखूँगा
ना निकलूँगा कभी दिल से निकलने उनको ना दूँगा

चुराया दिल मेरा जिसने उसीका दिल चुराऊँगा
सदा ही दिल में रखकर के उन्हें अपना बनाऊँगा

लगी गर ठेस दिल में तो उसे दिल से भुलाऊँगा
दिलों में रोशनी भरकर अंधेरे को भगाऊँगा

चुभा खंजर जो आँखों से उसे दिल से निकालूँगा
सदा ही दिल को समझा कर सभी उलझन मिटाऊँगा

उमड़ता भाव दिल में जो भले ही कह ना पाऊँगा
मगर भावों में खोकर के सदा उनको बताऊँगा

मिलाकर मन से ही मन को दिलों से दिल मिलाऊँगा
दिलों में प्रेम पनपे जिससे वो बातें सिखाऊँगा

जो विकृतियाँ भरी मन में उसे बाहर निकालूँगा
पतित पावन जो कर जाए वो गंगाजल बनाऊँगा

सदा जो मान देते हैं मैं उनका मान रखूँगा
बसाकर के उन्हें दिल में सदा भगवान मानूँगा

❋

५६. फूल हैं

तेरे हर एक लहजे से मुखातिब फूल हैं
सदा ही चूमते अश्आर तेरे फूल हैं

कभी न तोड़ना खिलते हुए इस फूल को
सदा मुस्कान भरते ये दिलों के फूल हैं

भले उमड़ा दिलों में आज चाहत का समंदर
सवंरते उनके बालों में लगाना फूल हैं

मिलेगी ताजगी तुझको सदा ही सुरमई
सुबह देखा करो उठकर चमन के फूल हैं

बड़े नाजुक हैं संभालो तुम इन्हें हरदम
भरी है दिल कशी जिसमें वही ये फूल हैं

ये सारे चाँद तारे तोड़कर कदमों में रख दूँगा
तुम्हीं कहते थे जिनसे वही ये फूल हैं

तुम्हें जो आसमा के चाँद से भी ज्यादा प्यारा था
है महाकाया तेरा जीवन वही ये फूल हैं

❋

५७. जाने किस चाह में

विडम्बनाएँ बहुत हैं हृदय चाह में
चाह रोड़े बने हैं मेरी राह में
कितनी सुंदर सरल ज़िंदगी चल रही
हो गया दिल ये पागल भी किस चाह में

रूप ऐसा ढला ज़िंदगी थम गई
जो भी अनुभव किया ज़िंदगी ले गई
सारे जीवन की चादर सिमट सी गई
चारों कोना मिले बस इसी चाह में

क्यों न सोचा कि सब कुछ रहेगा यहीं
ज़िंदगी ज़िंदगी सी न देखी कभी
जाल में स्वार्थ के ही क्यों फंसता रहा
ज़िंदगी भर नदिया घाव किस चाह में

धीरे-धीरे ही ये ज़िंदगी ढल गई
मेरे जीवन की सारी ख़ुशी छिन गई
जो मिला था न उस पर कभी ख़ुश हुए
जो मिला ना कभी बस उसी चाह में

❋

५८. निवेदन

डूब कर स्वार्थ में मानव प्रकृति को जब यहाँ छेड़े
प्रकृति ये सहन करती है यहाँ अन्याय सब तेरे

प्रकृति रोती बिलखती और मानव से ये कहती है
मुझे मत छेड़ मानव तू यही अब मेरी विनती है

सदा ही तुझको पाला है मैंने अपने पुत्र के जैसा
मगर तूने किया व्यवहार मुझ संग क्रूर के जैसा

तुम अपने स्वार्थ में ही डूब कर सब भूल जाते हो
प्रकृति होती यहाँ पर माँ समझ तुम यह न पाते हो

तेरा ज़हर पीकर तुझको अमृत ही पिलाती हूँ
पालकर बच्चों के जैसी मैं ही तुझको जिलाती हूँ

मैं हरदम कष्ट को सहकर तेरा जीवन बचाती हूँ
बना दे मुझको तू उपवन यही हर दिन मनाती हूँ

प्रकृति होगी यहाँ सूनी तो फिर संसार दहकेगा
प्रकृति होगी सुसज्जित तो यह संसार महकेगा

जो हम से प्रकृति रूठेगी सहारा मिल ना पाएगा
तुझे फिर काल के मुँह से बचा ना कोई पाएगा

अभी भी समय है संभलो चलो कुछ ऐसा कर जाए
बचाकर प्रकृति को अपनी धरा को पूरा महकाएँ

❋

५९. मज़दूर

करते हैं दिन रात परिश्रम तब जाकर जी पाते हैं
किसी तरह से जीवन में वो अपना पेट पालते हैं

सुनना पड़ता है मालिक की डाँट हमेशा रह-रहकर
करते रहते काम हमेशा गाली को भी सह सह कर

एक सम्मान को पाने को अपमान सहन कर लेते हैं
पहुँची ठेस भावना मन में दबा हमेशा लेते हैं

बीवी बच्चों के पालन में कोई कमी न रह जाए
हरदम मेहनत करते जिससे कष्ट कोई ना हो पाए

नहीं बताते बच्चों से दुख स्वयं सहन कर जाते हैं
आगे का जीवन सुखमय हो यह स्वप्न देखते जाते हैं

एक सुख पाने की लालच में सब दुख सहते रहते हैं
कठिन परिश्रम करने से वो बुड्ढे जैसे दिखते हैं

एक फटा हुआ मैला कुर्ता पैरों में हल्का चप्पल है
थकान मिटाने को अपने कंधे पर रखा चद्दर है

पोछ पसीने को चद्दर ताजा महसूस वो करते हैं
उसे लपेटे सिर में अपने सदा धूप से बचते हैं

मज़दूरों का जीवन तो मेहनत पर टिका हुआ होता
होते ना मज़दूर अगर तो काम कोई भी ना होता

❋

६०. आँखों का सागर

देखा मैंने सागर को जब तेरे इन दो नैनों में
भाव मेरा तो भावुक होकर डूब गया तेरे नैनों में

सागर की क्या गहराई होगी जितनी तेरे नैनों में
उतना रत्न नहीं सागर में जितना तेरे नैनों में

छलक गया जब आँसू बनकर सागर पीछे छूट गया
तड़प उठी सीने के अंदर भाव में जब-जब डूब गया

सागर तो केवल बदन डुबोता मन को डुबोता आँसू है
सागर तो नदियों से भरता भाव से भरता आँसू है

लालसा सदा ही दोनों की पाने को हरदम होती है
सागर सिर को पटकता रहता मौन सी आँखें होती हैं

सागर तेरा पानी खारा बूद आँख की प्यारी है
आँखों के सागर की लीला पूरे जग से न्यारी है

❊

६१. मुझे गाँव में रहने दो

मुझे गाँव में रहने दो अपने में ही सिमटने दो
छेड़ो ना मुझको तुम सब मिल गुमनाम सा जीवन जीने दो
मुझे गाँव में रहने दो

गुमनामी का जीवन जीना हमको अच्छा लगता है
करो ना जगजाहिर मुझको अंतर्मुखी ही रहने दो
गाँव छोड़कर शहर में जाऊँ प्यार गाँव का मैं ठुकराऊँ
जिसमें बचपन पला है मेरा उसको कैसे भूल मैं जाऊँ
प्यार गाँव का बहुत ही अच्छा इस प्यार में मुझको जीने दो
मुझे गाँव में रहने दो

गाँव की गलियाँ शहर से अच्छी गाँव की कलियाँ सुंदर हैं
गमले की अब चाह नहीं है क्यारी में ही रहने दो
प्रकृति प्रदत्त हवा जो मिलती उसी में सांसे लेने दो
खेती बाड़ी का काम करूँ मैं धूप छाँव मुझे सहने दो
मुझे गाँव में रहने दो

हर मौसम कोकिल सा लगता ऋतु बसंत के जैसा दिखता
नहीं कमी कोई इसमें मुझे इस मौसम में रहने दो
छाया बिल्डिग की नहीं चाहिए पेड़ की छाँव में रहने दो
भीड़भाड़ से डर लगता है मुझे अकेले रहने दो
मुझे गाँव में रहने दो

दीपक ही बन कर जीवन में उजियारा मैं करता रहूँ
बैठ के गलियारों में हरदम राह प्रकाशित करता रहूँ
लाइट नहीं बनाओ मुझको दीपक जैसे जलने दो
सिमट ना जाऊँ छत के नीचे तारे मुझको गिनने दो
मुझे गाँव में रहने दो

❊

६२. संघर्ष ही जीवन

चिंता मत कर असफलता की मत पछताओ जीवन में
जीवित रहना व्यर्थ है गर संघर्ष न हो इस जीवन में

जीवन है दो दिन का मेला हंस लो गा लो जीवन तेरा
चिंता में डूबे हंसे नहीं तो जीवन है बेकार ये तेरा

देख रात दुख की ये बदली करो न तुम इस मन को भारी
सदा रहा ना दुख जीवन में सुख दुख आते बारी-बारी

बड़े-बड़े भी इस जीवन में ऐसे वैसे बन जाते हैं
बिल्डिंग में भी रहने वाले मिट्टी में मिल जाते हैं

मानव की सोच हमेशा उसको उस पथ पर ले जाएगा
जैसी होगी सोच हमारी सुख-दुख वैसा पाएगा

संघर्ष हमेशा करते चलिए यह अवसर फिर ना आएगा
कुछ दिन कष्ट उठा ले बंधु फिर यह वक्त गुजर जाएगा

❋

६३. आंतरिक शक्ति

बाहर से टूट भले जाओ पर अंदर से मजबूत रहो
बल पौरूष कुछ घट जाए पर दिल इच्छा बलवान रहो

टूट गये जो अंदर से तो बचा नहीं कोई पाएगा
कितना भी सहारा बने कोई पर संभल कभी ना पाएगा

अंदर से तुम मत टूटो साहस को ही दिखलाओ
अपने जीवन की नौका को पार हमेशा कर जाओ

समय की मार से टूट गए पर दिल से गर ना टूटोगे
बिगाड़ कोई न सकता तेरा हर दम ही मजबूत रहोगे

साहस करके दिल अपना मजबूत यहाँ जो करते हैं
विपरीत परिस्थिति आने पर भी धैर्य यहाँ पर धरते हैं

धैर्य पूर्वक रहे यहाँ जो हरदम वो मजबूत हुए हैं
देख के बाधा जो विचलित हो वो हरदम कमजोर हुए हैं

❊

६४. ज़िंदगी का सूनापन

भगाएं सभी सूनापन ज़िंदगी का
चलो आज मिलकर के हम खेलते हैं

ये जीवन भी बन जाए सबका सुहाना
चलो आज ऐसा जतन ढूँढ़ते हैं

दिलों को दिमागों से ऊपर ही रख कर
विचारों में ही अब यहाँ डूबते हैं

रहे अब ना दूरी दिलों से दिलों की
चलो आज दिल में जगह ढूँढते हैं

बीते ये जीवन ख़ुशी में हमेशा
चलो आज दिल में खुशी ढूँढते हैं

खेल जो बचपन में खेले थे हमने
चलो आज उसको ही फिर खेलते हैं

रिश्तों की ख़ुशबू जो बिखरी यहाँ पर
चलो आज उसको ही अब देखते हैं

उम्र भर ही जिसे गुनगुनाते रहे हम
चलो ऐसा नगमा कोई छेड़ते हैं

जीवन तो है एक अधूरी कहानी
सफल हो यह जीवन जतन ढूँढते हैं

❋

६५. परिवार

मिला दिल दिल वही परिवार
मिला ना दिल तो है बेकार

विचारों में समझ सौहार्द
सदा ही है सुखद परिवार

एक घर अजनबी व्यवहार
वही सदा बिखरा परिवार

चाल धोखा और चलाकी
बसा कलह का साम्राज्य

कोई इज्जत ना मर्यादा
वही टूटा हुआ परिवार

बड़ों का आदर छोटों को प्यार
वो घर सदा स्वर्ग समान

नारी का पूरा सम्मान
घर देवता का स्थान

❋

६६. सवाल ये है

झूठ मूठ के बहकावे से
दिल को अपने बचा के रखना
बहुत कठिन होती ये डगर है
कदम को अपने संभाले रखना

तपन फ़िजाओं में अब बहुत है
घुटन अंधेरे में अब बहुत है
सभी दुखाते हैं दिल यहाँ पर
दर्द दिलों का भी अब बहुत है

जो दिल ये टूटा कभी तुम्हारा
जुड़ेगा ना फिर सवाल यह है
अगर जुड़ा भी कभी दुबारा
पड़ेगी गाठें सवाल ये है

सदा ही डाली पे खिलखिलाना
चमन में अपने ही मुस्कुराना
विखेर करके धरा पे ख़ुशबू
नज़र को सबके ही तुम लुभाना

मेल सदा ही बना के रखना
धूप से उसको बचा के रखना
हरण चीर का कभी ना होगा
पर्दे अपने बना के रखना

कहीं यह काला पड़े ना चेहरा
नज़र का तेरे सवाल ये है
अगर जो उंगली उठी कभी तो
जिओगे कैसे सवाल ये है

❋

६७. दिल न ये टूटा होता

गर तेरा भाव मेरे भावो में डूबा होता
माधुरी रात बनके दिल में उजाला होता

कभी ना देखता मैं आसमाँ के चंदा को
दिल में चेहरा तेरा गर चाँद सा उतरा होता

कौंध जाती ये बिजली दिल में मेरे रातों को
तेरा उरोज घटा बनके जो उभरा होता

बैठी रहती तू मेरे दिल में समा कर ऐसे
जैसे फूलों के बीच ख़ुशबू का डेरा होता

सदा ही उगता मेरे भावों का पौधा ऐसा
जैसे जल में ही सदा पुष्प कमल हो खिलता

सदा ना देखता मैं तुझको रात ख़्वाबों में
बनके हमराज मेरे साथ जो खड़ा होता

अंधेरा घना दिल से मेरे तब तो छठ जाता
प्रभात सूर्य सा तू बनके जो उगा होता

अगर न आती सजके रात मेरे ख़्वाबों की
भुने पापड़ के जैसे दिल न ये टूटा होता

❋

६८. जब मन में

प्रेम द्रवित ना हो जब दिल में
मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

सुख देखे दूजे का कैसे
भरी हुई ईर्ष्या जो मन में

राज दिलों में छुपा के रखे
भरी हुई है खोट जो मन में

जग ये सुंदर लगे भी कैसे
इच्छा के हैं मोड़ जो मन में

दान करेगा कैसे उनको
लालच ही है भरा जो मन में

आनंद कहाँ से मिलेगा उनको
अध्यात्म ज्ञान है नहीं जो मन में

तब कौन किसी का होता है
स्वार्थ भरा हो जो जीवन में

अपनत्व की आभा छाए कैसे
खंजर चुभा हुआ जो दिल में

❊

६९. सूनापन और एकाँतवास

सूनापन एकाँतवास एक बातें जैसी दिखती हैं
सूनापन एकाँतवास में बहुत भिन्नता होती है

एकाँतवास तो जीवन का वरदान हमेशा होता है
सूनापन तो जीवन का अभिशाप हमेशा होता है

एकाँतवास से जीवन को आराम बहुत ही मिलता है
सूनापन तो जीवन में छटपटाहट ही देता है

घबराहट तो सूनेपन से सदा सभी को होती है
शांति सदा इस जीवन में एकाँतवास से मिलती है

बाहर ही रहती नज़र हमेशा सूनापन कहलाता है
अंतर्मुखी हुई जब नज़रें तो एकाँतवास कहलाता हैं

मनुष्य अकेले सूनापन से जब एकांत की यात्रा करता है
उसकी यही यात्रा ही एकाँतवास कहलाता है

मंजिल राही और रास्ता जब वही स्वयं बन जाता है
तब सूने पन से एकाँतवास में वही मनुष्य आ जाता है

फिर बाहर दिखता नहीं उसे कुछ सब अंदर ही दिख जाता है
वाह्य दृष्टि जब बदल गई तो अंतर्मुखी हो जाता है

❋

७०. हमारा संरक्षण

है प्रकृति आवरण ज़िंदगी का यहाँ
बात सच है इसे भूलो मत तुम कभी

इस प्रकृति से ही सबका है जीवन बचा
भूल कर भी इसे छेड़ो मत तुम कभी

सारा जीवन धधकता ही रह जाएगा
गर प्रकृति रूठ जाएगी तुमसे कहीं

तेरी सांसे ये बसती प्रकृति में सदा
सांसो की डोरी ना टूट जाए कहीं

इस प्रकृति को बना दे तू उपवन सदा
ध्यान रखो ना ये सूख जाए कहीं

इस प्रकृति पर ही तेरा है जीवन टिका
आओ वृक्षों को हम सब लगाएँ अभी

आज ऐसे मिलाए प्रकृति से कदम
इसका बिगडे़ ना संतुलन फिर

कभी ये वही वृक्ष है जिनकी शाखाओं पर
कोयलें गीत हमको सुनाती कभी

कितने पशु पक्षी का है बसेरा यहाँ
काट जंगल को वीरान ना बनाओ कभी

❋

७१. हमारा भाग्य

तन भी सुंदर मन भी सुंदर सुंदर है व्यवहार
जिस दिन से तुम मिले हो मुझको छाई हुई बहार
मेरा तो प्यार तुम्हीं हो

जुड़ा हुआ है नाता तुझ से तुझ से ही पहचान
तुझसे रौनक हुई बहारें बिन मौसम बरसात
मेरी तो शान तुम्हीं हो

गर्व तुझी पर हरदम मुझको तुझ पर ही अभिमान
तू जो साथ रहे मेरे तो खुशियाँ मिले अपार
मेरा विश्वास तुम्हीं हो

घर परिवार सुखद लगता अब मिलता यहाँ जो प्यार
करती रहती सदा ही मुझ पर खुशियों की बौछार
मेरी हर खुशी तुम्हीं हो

जीवन को महकाया तुने राह नहीं दिखलाई
बनी हुई जो पगडंडी उस राह पर मुझे चलाया
मेरी हर राह तुम्हीं हो

शांत हुआ ये मेरा तन मन प्रेम की मिली जो छाया
विधि ने रचा विधान यहाँ जो मैंने तुमको पाया
कर्मों का परिणाम कहूँ या कहूँ भाग्य का लेखा
आशीष मिला जो माता-पिता का पूज्य गुरु की छाया
हमारा भाग्य तुम्हीं हो

❊

७२. मेरी इच्छा

कष्ट किसी को भी ना पहुँचे मेरे मन एवं कर्मों से
मन वाणी और कर्म को अपने हरदम रखू संयम में

हिंसा से मैं बचूं हमेशा अहिंसा का पथ अपनाऊँ
सत्य मार्ग पर चलूं हमेशा असत्य सदा ही ठुकराऊँ

उचित अनुचित में करके भेद उचित मार्ग मैं अपनाऊँ
नैतिक मूल्यों का पतन ना हो नैतिकता को ही अपनाऊँ

गलत बात यदि करे कोई ना बचन को अपने कठोर करूँ
सत्य मार्ग को अपना करके दृढ़ता से प्रतिकार करूँ

फिर भी समझ नहीं पाया तो अंदर अपने मौन रखूँ
एक ना एक दिन समझेगा वह मन में अपने धैर्य धरूँ

सबके अंदर भाव जगाऊँ सबको अच्छी राह दिखाऊँ
प्रेरित करके सब के दिल को सब में प्रेम का दीप जलाऊँ

भाव प्रभाव प्रबल होता है रखूँ भाव हरदम निर्मल
डूब के भावो में ही अपने करूँ ये जीवन मैं उज्जवल

❋

७३. उसको मंजिल लिख दिया

देखकर चेहरे को उसके ग़ज़ल हमने लिख दिया
डूब उसके भाव का सौंदर्य हमने लिख दिया

कान की बाली सुशोभित उसके ऊपर हो रही
उसको मैंने आसमान का इक सितारा लिख दिया

लालिमा से युक्त लाली होठ पर जब सज गई
क्षीर सागर में गमकता कमल हमने लिख दिया

मंद सी मुस्कान उसके होंठ पर जैसे खिली
लालिमा से युक्त उसको प्रात सूरज लिख दिया

जो लटकते केस काले आज उनके गाल पर
चाँद पर काली घटा का पहरा हमने लिख दिया

उनके दो चंचल नशीले नैन जो ठहरे कभी
उसको तो हमने जहाँ का गहरा सागर लिख दिया

जब कभी भी राह चलते दिल धड़कने ये लगा
रास्ता खुद को कहा और उसको मंजिल लिख दिया

पूछा किसी ने हाल ए दिल तो भाव में ही डूब कर
अश्क आँखों से बहाकर प्रेम उसको लिख दिया

❋

७४. पिता

माँ ने अपनी कोख में पाला पिता ने अपने जेहन में
अपना सब कुछ अर्पित करके सुख भर देते जीवन में

उंगली पकड़ के चलना सिखाया बोलकर वाणी को चहकाया
सीख मिली मर्यादा की संस्कार सदा उनसे ही पाया

उम्मीदों के पंख दिए और ऊँचा सा आकाश दिया
ज़मीं आज जो मिली मुझे है पिता ने ही वो नींव दिया

पिता से ही उम्मीद मिली और पिता से ही जीवन पाया
पिता से ही अस्तित्व मेरा और पिता से ही संबल पाया

छत की जरूरत नहीं पड़ी पिता का जब जब साथ मिला
घर की जरूरत नहीं हुई जो पिता के दिल में जगह मिली

बैठ पिता के कंधे पर ही आकाश सदा हमने पाया
रात अंधेरी कभी मिली तो दीप पिता ने सदा जलाया

जीवन में माँ बाप से बढ़कर कोई सहारा दूजा नहीं
पिता का हाथ अगर सिर पर तो चाह ताज की कोई नहीं

❋

७५. जिन्दगी का रहस्य

ज़िंदगी एक उलझा हुआ ख़्वाब है
कब क्या देखले कुछ पता ही नहीं

जो हुआ ना कभी भी दिवास्वप्न में
रात में कैसे आया पता ही नहीं

रात आती गई दिन ये ढलते गए
ज़िंदगी के सफ़र रोज कटते गए

दुख भरे पल ये जीवन के कटते नहीं
सुख के पल कब ये बीते पता ही नहीं

ज़िंदगी सिलसिला काफी लंबा रहा
मौत का साथ तो दो पल भी नहीं

मुँह छुपा करके बैठी कहाँ मौत है
बात इतनी किसी को पता ही नहीं

ग़म कभी तो कभी ख़ुशियाँ मिलती गई
सबकी ही ज़िंदगी यूँ गुजरती गई

स्वार्थ के भाव में डूबते ही गए
क्यों मैं आया जगत में पता ही नहीं

उग गया हो मगर ना ढला हो कोई
एक जैसा ही जग में रहा हो कोई

चाहे बचने का कितना भी कर ले जतन
वक्त के छल से कोई बचा ही नहीं

❋

७६. आज इतराई होगी

ज़िंदगी आज कितनी सजी होगी
बाद मुद्दत के जब मिली होगी

दिल में उठा होगा तूफ़ान नया
ख़ुद संभाले नहीं संभली होगी

प्यार जैसे ही उसका मिला होगा
कली पुष्प सी खिली होगी

होगा छाया बहारों का मौसम
ख़ुश्बू सांसों में बसी होगी

सदा ही पास रहे दूर हो न कभी
दिल में इच्छा जगी होगी

सूने सपने जो बेकल करते
प्रेम की महफ़िल आज सजी होगी

अब तो पैर भी ज़मी पर न पड़ते होंगे
आज बिन बात मुस्कुराई होगी

कितने दिनो के बाद मन मकरंद भरा
पाके बसंती हवा इतराई होगी

❋

७७. सदा ही उल्लास

आज हम जलाएँ प्रेम दीपक दिल के द्वार
जिससे प्रकाशित हो ये पूरा संसार
रहे न अंधेरा न अज्ञानता का वास
सब के दिलों में भरे प्रेम का प्रकाश

भाव हो पावन सबका प्रखर विचार
सब के दिलों में बहे शीतल बयार
दया माया ममता हो दिल में अपार
प्रेम का ही दीपक जले सदा संसार

कर्म धर्म नीति का हो मन में निवास
भाव जागे दिल में सभी के दिन रात
प्रेम की बसे दिलों में ख़ुशबू अपार
कभी ना बने किसी के जीवन में खार

अधरों पे रख अपने मधुर मुस्कान
कोमल हृदय में करें प्रेम का संचार
मन हो ना कुंठा न दूषित विचार
त्याग प्रेम दिल में ही भरा हो अपार

छल दंभ ईर्ष्या ना आए कभी पास
होती रहे प्रेम की सदा ही बरसात
धरती से लेकर के पूरा आकाश
छाया हो जगत में सदा ही उल्लास

❋

७८. दिलों के फूल

तेरे हर एक लहजे से मुखातिब फूल हैं
सदा ही चूमते अशआर तेरे फूल हैं

कभी ना तोड़ना खिलते हुए इस फूल को
सदा मुस्कान भरते ये दिलों के फूल हैं

भले उमड़ा दिलों में आज चाहत का समंदर
संवरते उनके बालों में लगा ना फूल है

मिलेगी ताजगी तुझको सदा ही सुरमई
सुबह देखा करो उठकर चमन के फूल हैं

बड़े नाजुक हैं संभालो तुम इन्हें हर दम
भरी है दिलकशी जिसमें वही ये फूल हैं

ये सारे चाँद तारे तोड़ कर कदमों में रख दूँगा
तुम्हीं कहते थे जिनसे ये वही तो फूल हैं

हमेशा आसमाँ के चाँद से भी ज्यादा प्यारा था
जो महकाया तेरा जीवन वही ये फूल हैं

❋

७९. बिछ्ड़ने का दर्द

जब से मुझसे बिछड़ गए तुम याद बहुत ही आती है
दिल में उपजा भाव विरह की अग्नि हृदय को जलाती है

दर्द छुपा है दिल में जो वो बाहर ना दिख पाता है
आँख से आँसू बहता हरदम मन विचलित हो जाता है

करुण वेदना छाती दिल में आह दिलों से उठती है
रोम रोम में कंपन होता कुश के जैसे चुभती है

कष्ट बताएं किसको अपना उसको दूर करेगा कौन
अपने दिल पर पत्थर रखकर हरदम रह जाता हूँ मौन

आँखों का पानी सूखा पर घाव बना रह जाता है
दिल भावुक हो जाता जब जब घाव हरा हो जाता है

एक दिन का ये बिरह नहीं जीवन भर अब तो दूर हुए
सहा नहीं जाता है फिर भी सहने को मजबूर हुए

❋

८०. खुशियों में ज़िंदगी

शाम के जश्न का हाल पूछो ना अब
मुस्कुराती हुई हर सुबह है मेरी

दिन तो रोशन हुआ शाम हर सुरमई
बीतती खुशियों में ज़िंदगी है मेरी

प्रेम में डूब दिल जबसे उपवन बना
तब से कलियाँ दिलों में मेरे खिल गई

अब तो हर एक समय गीत होठों पे है
आज महफ़िल दिलों की तो फिर सज गई

ऐसा लगता कोई जैसे जादू चला
कितनी सुलझी हुई ज़िंदगी हो गई

आसमा चाँद से ना उजाला हुआ
दिल ज़मीं चाँद रोशन सी होती गयी

दिल ने चाहा कभी जब किसी चाँद को
रोशनी चाँद दिल में उतरती गयी

ज़िंदगी सिलसिला यूँ ही चलता रहा
उम्र तो अपने रंग में ही ढलती गयी

भाग्य जीवन का मेरे निखरता रहा
प्रेम दिल डूब पावन सी करती गयी

❋

८१. अपनी मिट्टी

सोंधी ख़ुशबू मिट्टी की तो मातृभूमि में मिलती है
मातृभूमि की मिट्टी में रिश्तों की ख़ुश्बू बसती है

अभिनंदन की ये धरती है पूर्ण समर्पण की धरती
देश प्रेम रग रग में भर रसधार प्रेम की बहती है

जिस मिट्टी में बचपन बीता खेला है जिस मिट्टी में
स्नेह सदा ही मैंने पाया अपने देश की मिट्टी में

तिलक लगाकर मातृभूमि का मिट्टी को ही चूम गए
मातृभूमि से प्रीत लगा फाँसी के फंदे झूल गए

भारत माता का जयकारा दिल में भाव से गूँज उठा
जगी भावना देश प्रेम मन देश पे ही कुर्बान हुआ

देश प्रेम के नशे के आगे हर एक नशा भी फीका है
मातृभूमि ख़ुश्बू के आगे पुष्प की ख़ुश्बू फीकी है

बीते सारा जीवन मेरा चाहे जिसकी गोदी में
सदा प्रवासी हुए वहाँ के मूल तो अपनी मिट्टी में

❋

८२. प्रंवचना

लालच के वशीभूत हो जो धन में ही डूबे
सुख में सदा ही साथ रहे दुख में जो छूटे

मजबूरियों के लाभ जिनके शौक बन गये
पशु रूप में ही रहे वो मानव न बन सके

शब्द भीगे भाव में न अर्थ बह सके
उसकी सफलता के न ये दरवाजे खुल सके

निस्वार्थ भाव मन में जिसके पल नहीं सके
फरिश्ता बनना दूर वो मानव ना बन सके

जो लाभ में ही अपने सदा स्वार्थ में डूबे
धंधा ही किये स्वार्थ के सेवा न कर सके

मिल जाती कैसे खुशियाँ जिसने लक्ष्य न भेदे
ऊँचे उठे और अपनी मर्यादा भी जो भूले

❋

८३. देश निराला

मैं तो कहता हूँ सचमुच ये देश निराला मेरा है
विविध रंग से भरा हुआ ये देश रंगीला मेरा है

नशा भरा है देश प्रेम की एकदम ये मधुशाला है
जो भी रंगा है इसके रंग में वह एकदम मतवाला है

मजहब के रंग में रंगा हुआ हर धर्म से सबका नाता है
सबकी अपनी धर्म जाति सबकी बोली भाषा है

अच्छे बुरे यहाँ हैं दोनों चोरों का मुँह काला है
समय-समय पर गद्दारों का चलता भी बोलबाला हैं

देश प्रेम भी भरा हुआ है सब लोगों की रग रग में
देश की खातिर मिटे यहाँ हैं आजादी के भी रण में

भरी विलक्षणता है इनमें डाकू भी कविराज बने
मूर्ख बने उधो जाकर के ज्ञानी कालिदास बने

❋

८४. भूल को सुधार लें

आओ आज ज़िंदगी की भूल हम सुधार लें
जो भरा है द्वेष मन में आज हम निकाल दें

सब की मुस्कुराहटों पे आज दिल निसार दें
कलियाँ जो खिली हैं दिल में उसको अब सवार दें

कमियाँ जो मेरी हैं उसको आज हम निकाल दें
नेक काम करके अपना जीवन अब सुधार लें

कष्ट जो उठाए तूने उसको भी बिसार दें
नेक राह पर ही चलके ज़िंदगी सवार दें

प्यार दे के ज़िंदगी को प्यार से सवार दें
संघर्ष भरी ज़िंदगी है कर्म की ही धार दें

दूर होगी बाधा तेरी दूर होंगे कष्ट सब
मन लगाकर जब पढ़ोगे कर्म की किताब को

जो बची है ज़िंदगी वो हंस के अब गुजार दो
क्या पता कि कौन सा पल ज़िंदगी की शाम हो

❋

८५. देखो सावन आया

आसमान में घिर गयी बदरिया
देखो सावन आया
झूले पड़ गए डाल-डाल
कोयल ने गीत सुनाया है

उपवन खिला-खिली धरती
चहुँ ओर ख़ुशी ही छाई है
घास फूस संग पुष्प खिले
छाई धरती हरियाली है

पर्यावरण सुगंधित करके
हवा ने जग महकाया है
खिली प्रकृति की छटा निराली
मन का भाव जगाया है

चमकी बिजली बादल गरजा
चहुँ ओर अंधेरा छाया है
अधियारों में घिरकर भी
जुगनू ने दीप जलाया है

चमक रहे तारों को नभ ने
दिल में आज छिपाया है
पास में रहकर चाँद दिलों का
प्रेम का भाव जगाया है

खुशहाली फैलाकर सावन
प्रेम का पुष्प खिलाया है
प्रेम गीत को सुन मनमोहक
सावन भी मुस्काया है

❋

८६. प्यार करता हूँ

तुम्हारी शख्सियत कितनी मुझे मालूम है लेकिन
भूल कर शख्सियत अपनी मैं तुझको प्यार करता हूँ

कहीं ये प्यार मेरा उथला या सूना न रह जाए
डूब कर भाव में दिल से दिलों की बात करता हूँ

कहीं खिलते हुए महलों को ये खंडहर न बना दे
सोच कर आँख के कोनो को नज़रअंदाज करता हूँ

कहीं आ जाऊँ ना जद में तेरे आँखों के मंजर के
सोच करके उठे तूफान दिल में शांत करता हूँ

कहीं ये बुझ न जाए दीप दिल में जो मेरे जलते
संभल करके ही लौ पर मैं सदा ही हाथ रखता हूँ

कहीं यादों की ज़मीं पर ही न रह जाऊँ सिमट कर
सोच करके निगाहें होठ पर मुस्कान भरता हूँ

भुलाओगी कभी ना तुम ये बातें जान करके ही
सदा से दिल में रख कर दिल से तुमको याद करता हूँ

अब हाँ करें या ना करें मर्जी तुम्हारी है
दोगे जवाब जो भी वो स्वीकार करता हूँ

❋

८७. सकारात्मक सोच

होता उनका जीवन निर्मल, जिनकी सोच सही होती है
अगर सोच है सकारात्मक, जीवन में खुशियाँ भरती हैं

गलत सोच रखकर के मन में, काम यहाँ जो करता है
दुख मय जीवन होता उसका, सदा ही राह भटकता है

कर्म तुम्हारा गलत दिशा में, आज अगर मुड़ जाएगा
धन दौलत को पाकर भी, तू चिंतित ही रह जाएगा

कर्म करो तुम, समय से पहले, भाग्य से ज्यादा, नहीं मिलेगा
हुआ अगर संतोष तुझे तो सब तुझको पर्याप्त मिलेगा

जितना मिला यहाँ है तुझको, गर उसमें संतोष नहीं
पूरी दुनिया मिल जाए, फिर भी यह जीवन सफल नहीं

मिला है जितना यहाँ पे तुझको, उतने में खुश रहना सीखो
आसमान पर उड़ो नहीं तुम, धरती पर ही जीना सीखो

संतोष त्याग कर लालच में ही, आज अगर फंस जाएगा
मन में तृष्णा भरेगी तेरे, प्यासा ही रह जाएगा

❋

८८. दिल के कोने में

तुम्हारे कर्म शामिल थे तुम्हारे गगन छूने में
महज एक भाग्य तेरा था ना तुझको पंख देने में

ज़मीं तैयार की थी जब तुम्हारे कर्म फूलों की
तभी महका गगन सारा तुम्हारे मुस्कुराने में

हजारों पंख शामिल हों अगर ना हौसला दिल हो
सदा अक्षम रहेगा वह गगन पर उड़ के जाने में

अगर धरती को चूमोगे तभी आकाश पाओगे
अगर आधार छोड़ोगे तुम्हें रोकेगा जाने में

दिलों में अहम् पालोगे डूब कर अपनी शोहरत पर
भले दीपक जले होंगे रहोगे तुम अंधेरों में

हँसाना सीख लोगे गर कभी तुम भी ज़माने को
करेंगे सब मदद तेरी तुम्हारे मुस्कुराने में

महज अपने लिए जीना कोई जीना नहीं होता
भगाओ आज जा करके जो ग़म बिखरे ज़माने में

देख कर के जो कठिनाई अगर तुम हौसला तोड़ो
निराशा साथ देगी तब तुम्हारे टूट जाने में

❋

८९. शिक्षक

गुरु है सरलता में गुरु है प्रखरता में
ज्ञान गंगा गुरु की ही पावन फुहार है

गुरु का ही ज्ञान इस जगत में छाया हुआ
गुरु से प्रकाशित ये ज़मीन आसमान है

गुरु के ही ज्ञान और उनके प्रयास से ही
आंतरिक शक्तियों का होता ये विकास है

ज्ञान से ही सबके अज्ञान को भगाने वाले
गुरु में ही ज्ञान का अपार भंडार है

गुरु मंजिल रास्ता है गुरु पतवार हैं
गुरु रखते छोटे बड़े सब का ही ध्यान हैं

पालते हैं पोसते हैं ज्ञान की जलधार से
बच्चों का बगीचा खिलता गुरु के ही ज्ञान से

गुरु साक्षात प्रतिमूर्ति होते ज्ञान के
उन्हीं से ही विकसित ज्ञान विज्ञान है

गुरु में है भावना सभी के कल्याण की
इसीलिए गुरु का सर्वोच्च स्थान है

❋

९०. रक्षाबंधन

रेशम की डोरी नहीं मात्र यह प्रेम की डोरी होती है
क्षणिक नहीं होती है ये तो जीवन भर की होती है

ये तो संस्कृति है परंपरा मूल तो रक्षा होती है
महसूस करें जो भावों से तो अंदर दिल में चुभती है

भाई रक्षा के लिए कलाई बहनेआज सजाती हैं
बाँध कलाई रक्षा की भाई से प्रेम जताती हैं

बंधन तो भाई–बहनों का जन्म जन्म का होता है
भाई निर्वहन करें न करें बहन निभाना जानती है

बचपन में भाई बहनों का एक अनूठा रिश्ता था
बहन विदाई होने पर भाई का दिल दुखता था

याद उन्हें आ जाता है नोक झोंक वाला बचपन
भले किसी की आज यहाँ पर उम्र हो गई हो पचपन

विश्वास हमेशा पति से ज्यादा भाई पर ही करती हैं
भाई की खुशियों की चाहत हरदम दिल में रखती हैं

रक्षाबंधन पर बहनों की इच्छा हरदम होती है
भाई आए घर पर मेरे हरदम बाट जोहती हैं

इच्छा नहीं धनो की होती भाई को ही चाहती हैं
ख़ुशी का आँसू आँख में भरकर अक्षुंण प्रेम चाहती हैं

वर्षों से सजाए बैठी रहती मन में रक्षा की खुशियाँ
कितनी जल्दी आए वह दिन फैले जब सारी खुशियाँ

भाई गर उनसे दूर हुआ या भाई से वह दूर हुई
याद वो करके भावों से भाई के नजदीक हुई

♦ ♦ ♦

व्यक्ति परिचय

गिरिराज पांडे

पुत्र श्री केशव दत्त पांडे एवं स्वर्गीय श्रीमती निर्मला पांडे
ग्राम वीरमऊ, पोस्ट पाईक नगर, जिला प्रतापगढ़,
उत्तर प्रदेश पिन कोड-२३०१४२.
जन्म तिथि : ३१ मई, सन १९७७

योग्यता परास्नातक हिंदी साहित्य (एमडीपीजी कॉलेज) प्रतापगढ से सन १९९९-२००० प्राथमिक शिक्षा गांव के ही कालूराम इंटर कॉलेज शीतलागंज से ग्रहण करी। चार भाईयों अशोक पांडे, संजय पांडे, सिद्धार्थ पांडे (प्रवक्ता हिंदी केंद्रीय विद्यालय लखनउ कैंट) में सबसे छोटे हैं। परास्नातक करने के बाद गांव में ही पिताजी की सेवा करते हुए पत्नी अनुपमा पुत्री सौम्या पुत्र शाश्वत के साथ सुखपूर्वक जीवन यापन करते हुए व्यवसाय कर रहे हैं।

सन २०१८ से साहित्य सेवा में जुड़े हैं। अब तक ५८५ कविता एवं ७ कहानी लिख चुके है।

9789387861541

DOTCOM PUBLICATIONS®